हज का तरीकाह

क़दम ब क़दम

मुरत्तिब

मुफ़्ती
मुहम्मद हारिस साहब
पालनपूरी

दारूल इफ़्ता वल इरशाद
मदरसा रशिदिया मोमिन नगर
जोगेश्वरी (वेस्ट) मुंबई ४००१०२
कांटेक्ट ९८३३५८०९५४

हज का तरीकाह
क़दम ब क़दम

मुरत्तिब

मुफ़्ती
मुहम्मद हारिस साहब
पालनपूरी

दारूल इफ़्ता वल इरशाद

मदरसा रशिदिया मोमिन नगर
जोगेश्वरी (वेस्ट) मुंबई ४००१०२

कांटेक्ट ९८३३५८०९५४

तफ़सीलात

नाम ए किताब — हज का तरीकाह

मुरत्तिब — मुफ़्ती मुहम्मद हारिस साहब पालनपूरी

सन्न ए ईशाअत — १४४४/२०२३

क़ीमत

मिलने का पता

दारूल इफ़्ता वल इरशाद

मदरसा राशिदिया मोमिन नगर

जोगेश्वरी (वेस्ट) मुंबई ४००१०२

कांटेक्ट ९८३३५८०९५४

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْـمِ

اَمَّا بَعْدُ!

उमराह के फराइज (२) है

(१) **एहराम:** यानी उमराह की नीयत से एहराम बांधना और तलबिया पढ़ना।

(२) उमराह का तवाफ करना।

उमराह के वाजिबात (२) है

(१) सफा और मरवा की सई करना।

(२) हलक करना।

हज के फ़राइज (३) है

(१) **एहराम:** यानी हज की नियत से एहराम

बांधना और तलबिया पढ़ना।

(२) वुकूफे अर्फा यानी ९ / जिल हिज्जा को ज़वाले आफताब से १०/ जिल हिज्जा की सुबह सादिक तक अरफात में किसी वक्त ठेरना अगरचे एक लहजा ही क्यों ना हो।

(३) तवाफे जियारत यानी १०/ जिल हिज्जा को सुबह सादिक से १२/ जिल हिज्जा को गुरूबे आफताब तक ठेरना।

हज के वाजिबात (६) हैं

(१) मुज़्दलीफा मे ठेरना: यानी १०/ जिलहिज्जा की सुबह सादिक से तुलु ए

आफताब के पहले तक ठेरना।

(२) सफा और मरवा के दरमियान सई करना।

(३) शैतान को कंकरिया मारना: यानी १०/ जिलहिज्जा को जमरे अकबा की रमी करना और ११,१२/ जिलहिज्जा को तीनों जमरात की रमी करना।

(४) किरान और तमत्तू करने वाले का कुर्बानी करना।

(५) सर के बाल का हलक करना।

(६) आफाकी यानी मीकात से बाहर रहने

वाले को तवाफे विदा करना।

हज का तफ़सीली तरीका

घर से रवानगी

घर से रवाना होने से पहले सामाने सफर तैयार कर लें और अगर पहले मक्का मुकर्रमा जाने का इरादा हो तो मीकात से पहले एहराम बांधना होगा और अगर पहले मदीना मुनव्वरा जाने का इरादा हो तो मीकात से पहले एहराम बांधने की जरूरत नहीं है।

एहराम की तैयारी

घर पर एहराम का गुसल करने से पहले नाखून कतरे, जेरे नाफ और बगल के बाल साफ करें और एहराम की नियत से गुसल करें अगर गुस्ल का मौका ना हो तो वुज़ू करें।

एहराम की चादरे

फिर मर्द हजरात एहराम की दो सफेद चादरे पहने और खुशबू लगाएं, मगर एहराम पर दाग न लगने पाए, और जूते उतारकर हवाई चप्पल पहने, खवातीन सिले हुए कपड़े न उतारे उनका एहराम सिर्फ यह है कि अपना

सर ढाक ले और सर पर हैट या कैप वाली टोपी पहनकर ऊपर से नकाब डालें, ताकि नकाब का कपड़ा चेहरे पर न लगे।

एहराम की नियत से नफ्ल नमाज़

फिर सर ढाक कर अगर मकरुह वक्त ना हो दो रकात न्फ्ल नमाज एहराम की नियत से पढ़ें बेहतर ये है के पहली रकात में सूरह काफिरून और दूसरी रकात में सूरह इखलास पढे।

❁अगर उस वक्त खवातीन नापाकी के अय्याम में हो तो नमाज ना पढ़े। नमाज से

फारिग होकर सफर की आसानी और कुबूलियत इसी तरह अपने घर, कारोबार, और अहलो इयाल की हिफाजत के लिए दुआएं करें, घर से रवाना होने से पहले सदफा करें, उसके बाद घर से रवाना हो और घर से निकलते वक्त ये दुआ पढे:

بِسْمِ اللَّهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ

और जब सवारी या हवाई जहाज पर सवार हो उस वक्त ये दुआ पढ़े:

سُبْحَانَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ

مُقْرِنِينَ وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ

एक मशवरा

नियत व तलबिया के सिवा बाकी काम घर या एयरपोर्ट पर करें और जब हवाई जहाज फिजा में बुलंद हो जाए तो उस वक्त मीकात आने से पहले हज की तीन किस्मों इफ्राद, किरान और तमत्तू में से जिस हज का इरादा हो उसकी नियत करें।

हज की किस्म

हज की तीन किस्मे है:

(१) हज्जे इफ्राद।

(२) हज्जे किरान।

(३) हज्जे तमत्तू।

(१) हज्जे इफ्राद

हज्जे इफ्राद मे हज करने वा ला सिर्फ हज करता है, हवाई जहाज में मीकात से पहले इफ्राद करने वाला हज की नियत इस तरह करें:

"اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اُرِیْدُ الْحَجَّ فَیَسِّرْهُ لِیْ وَتَقَبَّلْهُ مِنِّیْ"

तर्जमा: ऐ अल्लाह में हज का इरादा करता हूं, उसे मेरे लिए आसान कीजिए और कुबूल फरमाइए। उसके बाद तीन मर्तबा

तलबिया पढे, फिर मक्का मुकर्रमा पहुंचकर तवाफ़े कुदूम करें। तवाफ़े कुदूम सुन्नत है। अगर तवाफ़े कुदूम के बाद हज की सई करना चाहे तो मर्दों के लिए तवाफ़े कुदूम के पहले तीन चक्करो मे रमल और सात चक्करो में इस्तेबा करना होगा। फिर तवाफे जियारत के बाद की सई ना होगी। तवाफे जियारत से फारिग होने के बाद एहराम ही में रहेगा और आठवीं ज़िलहिज्जा को मीना जाएगा और हज करेगा, दसवी ज़िलहिज्जा को रमी करके हलक के बाद एहराम से

निकलेगा, हज्जे इफ़्राद में दमे शु क्र यानी हज की कुर्बानी मुस्तहब है।

हज्जे इफ़्राद के अफ़्आल

१	हज का एहराम	शर्त
२	तवाफे कुदूम	सुन्नत
३	कयामे मीना (८/ ज़िल हिज्जा)	सुन्नत
४	वुकूफे अर्फा (९/जिल हिज्जा)	रुक्न
५	वुकूफे मुज़्दलीफा (१०/ज़िल हिज्जा)	वाजिब

६	आखरी जमरा की रमी (१०/ज़िल हिज्जा)	वाजिब
७	कुर्बानी	मुस्तहब
८	सर मुंडवाना	वाजिब
९	तवाफे जियारत	रुक्न
१०	सई	वाजिब
११	तीनो जम्रात की रमी (११-१२ ज़िल हिज्जा)	वाजिब
१२	तवाफे विदा	वाजिब

(२) हज्जे किरान

हज्जे किरान करने वाला हवाई जहाज मे

मिकात पर हज और उम्राह दोनों की नियत करके तीन मर्तबा तलबिया पढ़े और नियत इस तरह करें

"اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اُرِیْدُ الْعُمْرَةَ وَ الْحَجَّ فَیَسِّرْهُمَا
لِیْ وَتَقَبَّلْهُمَا مِنِّیْ"

तर्जमा: ऐ अल्लाह में अमरे और हज दोनों का इरादा करता हूं उनको मेरे लिए आसान फरमा दीजिए और कुबूल फरमा लीजिए। फिर मक्का मुकर्रमा जाकर उम्राह का तवाफ करें, इस तवाफ़ मे रमल और इस्तिबा होगा, फिर उमरे की सई करें, सई से फ़ारिग् होने के बाद

हलक नहीं करेगा बल्कि एहराम की हालत में रहकर हज भी उसी एहराम के साथ होगा। हज्जे किरान करने वाले के लिए सुन्नत है कि उमरे के तवाफ़ व सई से फारिग होने के बाद तवाफ़े कुदूम करें और अगर तवाफ़े कुदूम के बाद हज कि सई करना चाहे तो मर्दों के लिए तवाफ़े कुदूम के पहले तीन चक्करो मे रमल और सात चक्करो में इस्तिबा करना होगा। फिर तवाफ़े जियारत के बाद हज की सई ना होगी।तवाफ़ व सई से फ़ारिग होने के बाद एहराम ही मे रहेगा और आठवीं ज़िल हिज्जा

को मीना जाएगा और हज के अरकान अदा करेगा, दसवी ज़िलहिज्जा के बाद एहराम से निकलेगा, हज्जे किरान मे दमे शुक्र यानी कुर्बानी करना वाजिब है। हज्जे किरान करने वाले के लिए तवाफ़े कुदूम के बाद हज की सई करना अफ्जल है।

हज्जे किरान के अफ्आल

१	उम्राह व हज का एहराम	शर्त
२	तवाफे उम्राह	रुक्न
३	उम्राह की सई	वाजिब

४	तवाफे कुदूम रमल और इस्तिबा के साथ	सुन्नत
५	हज की सई	वाजिब
६	कयामे मीना (८/ज़िलहिज्जा)	सुन्नत
७	वुकूफे अर्फा ९/ज़िलहिज्जा)	रुक्न
८	वुकूफे मुज़्दलीफा (१०/ज़िलहिज्जा)	वाजिब
९	आखरी जमरा की रमी (१०/ज़िलहिज्जा)	वाजिब

१०	कुर्बानी	वाजिब
११	सर मुंडवाना	वाजिब
१२	तवाफे जियारत	रुक्न
१३	तीनो जम्रात की रमी (११-१२ ज़िल हिज्जा)	वाजिब
१४	तवाफे विदा	वाजिब

(३) हज्जे तमत्तू

हज्जे तमत्तू करने वा ला हवाई जहाज में मीकात पर सिर्फ उम्राह की नियत करके तीन मर्तबा तलबिया पढ़ें और नियत इस तरह करें:

"اَللّٰهُمَّ اِنِّىْٓ اُرِيْدُ الْعُمْرَةَ فَيَسِّرْهَا لِىْ
وَتَقَبَّلْهَا مِنِّىْ"

तर्जमा: ऐ अल्लाह में उम्राह का इरादा करता हूं उसको मेरे लिए आसान फरमा दीजिए और कबूल फरमा लीजिए। फिर मक्का मुकर्रमा पहुंचकर उम्राह का तवाफ, सई और हलक करे। फिर एहराम की पाबंदियां खत्म हो जाएगी। अब मक्का मुकर्रमा में हज के दिनों तक एहराम की पाबंदियों के बगैर रहेगा, फिर मीना जाने से पहले हज की नियत से दोबारा एहराम बांध

कर हज करेगा, १०/ ज़िल हिज्जा की रमी, हज की कुर्बानी और हलक से फ़ारिग हो कर एहराम से निकलेगा, हज्जे तमत्तू मे भी हज की कुर्बानी वाजिब है।

हज्जे तमत्तू के अफ्आल

१	उम्राह का एहराम	शर्त
२	उम्राह का तवाफ रमल और इस्तिबा के साथ	रुक्न
३	उम्राह की सई	वाजिब
४	सर मुंडवाना	वाजिब
५	हज का एहराम	शर्त

६	कयामे मीना (८/ज़िलहिज्जा)	सुन्नत
७	वुकूफे अर्फा ९/ज़िलहिज्जा)	रुक्न
८	वुकूफे मुज़्दलीफा (१०/ज़िलहिज्जा)	वाजिब
९	आखरी जमरा की रमी (१०/ज़िलहिज्जा)	वाजिब
१०	कुर्बानी	वाजिब
११	सर मुंडवाना	वाजिब

१२	तवाफे जियारत	रुक्न
१३	हज की सई	वाजिब
१४	तीनो जम्रात की रमी (११-१२ ज़िल हिज्जा)	वाजिब
१५	तवाफे विदा	वाजिब

हज्जे इफ्राद और हज्जे किरान करने वालों को उमूमन देर तक एहराम में रहना पड़ता है, और हज्जे तमत्तू करने वालों को ज्यादा देर तक नहीं रहना पड़ता, वो उम्राह करके हलक से फारिग हो कर एहराम की पाबंदियों से हज तक आजाद हो जाते हैं,

इसलिए हज्जे तमत्तू में आसानी रहती है, इसी वजह से अक्सर लोग हज्जे तमत्तू करते हैं, अलबत्ता फजीलत के एतेबार से हज्जे किरान अफ्जल है, फिर हज्जे तमत्तू और आखिर में हज्जे इफ्राद।

तलबियाह के अल्फाज

नियत के बाद मर्द बुलंद आवाज से और औरतें आहिस्ता आवाज से तीन मर्तबा

"لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ ، لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ ، إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ، لَا شَرِيكَ لَكَ"

पढ़ें।

तर्जुमा: हाजिर हु ऐ अल्लाह में हा जिर हूं, हाजिर हूं आपका कोई शरीके नहीं, मैं हाजिर हूं, सारी तारीफें और सब नेमतें सिर्फ आप ही के लिए हैं और सारी बादशाही भी आप ही के इख़्तियार में है, आपका कोई शरीक नहीं।

दुआ

उसके बाद दुरुद शरीफ पढ़कर यह दुआ मांगे:

"اَللّٰهُمَّ إِنِّىْ أَسْأَلُكَ رِضَاكَ وَالْجَنَّةَ
وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ غَضَبِكَ وَالنَّارِ"

तर्जुमा: ऐ अल्लाह में आपकी खुशनुदी और

जन्नत का तलबगार हूं और आप के गुस्से और दोज़ख से पनाह चाहता हूं, और उस मौके पर सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो दुआएं मांगी या बतलाई है वो मांगता हूं वह सब मेरी तरफ से कबूल कर लीजिए।

फजाईले तलबिया

तलबिया हज का शिआर है

तलबिया हज का खास जिक्र है, हज़रत ज़ैद बिन खालिद जुहनी रजि अल्लाह ताला अन्हू नकल करते हैं कि रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया के मेरे पास हजरत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने आकर ये हिदायत की के आप अपने सहाबा को बुलंद आवाज से तलबिया पढ़ने का हुक्म दे , क्योंकि तलबिया हज का खास शिआर है (सुनने इब्ने माजा)

हज में सबसे अफजल आमाल

हजरत अबू बकर सिद्दीक रजि अल्लाह ताला अन्हू से मार्वी है कि नबी ए करीम सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम से पूछा गया

कि हज में कौन सा अमल सबसे ज्यादा अफजल और पसंदीदा है? तो नबीए करीम सल्लल्लाहो वसल्लम ने इरशाद फरमाया:

" اَلْعَجُّ وَالثَّجُّ"

यानी बुलंद आवाज से तलबिया पढ़ना और कुर्बानी मे खून बहाना।(इब्ने माजा)

हाजी के साथ तमाम मखलुकात का तलबिया पढ़ना

हजरत सहल बिन अब्दुल्लाह रजि अल्लाहु ताला अन्हू फरमाते हैं कि नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद

फरमाया (उम्राह या हज करने वाले एहराम बांध कर) जब तलबिया पढते हैं तो उनके दाएं बाएं जितने भी पत्थर या दरख़्त या मिट्टी के ज़र्रात है वो सब ता मुंतहा ए जमीन उसके साथ तलबिया पढने लगते हैं। (इब्ने माजा)

जाहिर है कि जब पूरा माहौल ही तलबिया पढ़ने का हो उस वक्त तलबिया पढ़ने का कैफ और मजा ही कुछ और होता है।

तलबिया निदा ए इब्राहिमी का जवाब है

तबीयत दर असल हजरत इब्राहिम

अलैहिसलातु वस्सलाम के ऐलान का जवाब है। चुनांचे हदीस में आता है कि जब हजरत इब्राहिम अलैहिसलातु वस्सलाम बैतुल्लाह शरीफ की तामीर से फ़ारिग तो बारगाहे खुदावंदी मे अर्ज़ किया के तामीर से फरागत हो चुकी है, उस पर अल्लाह जल्ल शानुहु की तरफ से हुक्म हुआ के लोगों में हज का ऐलान करो, हजरत इब्राहिम अलैहिसलातु वस्सलाम ने अर्ज़ किया के या अल्लाह! मेरी आवाज किस तरह पहुंचेगी, अल्लाह जल्ल शानुहु ने फरमाया के आवाज़ का पहुंचाना हमारे जिम्में है, हजरत इब्राहिम अलैहिसलातु

वस्सलाम ने ऐलान फरमाया, जिसको आसमान और जमीन के दरमियान हर चीज ने सुना, और दूसरी हदीस में आया है कि जिस शख्स ने भी ख़्वाह वो पैदा हो चुका था या अभी तक आलमे अरवाह में था उस वक्त लब्बैक कहा, वह हज जरूर करता है। एक हदीस में है कि जिसने एक मर्तबा लब्बैक कहा वह एक हज करता है, जिसने दो मर्तबा लब्बैक कहा वह दो मर्तबा हज करता है, और इसी तरह जिसने उससे ज्यादा जितनी मर्तबा लब्बैक कहा उतने ही आज उसको नसीब होते हैं। (दुर्रे मंसूर) किस कदर

खुशनसीब है वो रूहें जिन्होंने उस वक्त दमादम लब्बैक कहा होगा, बिसियो हज उनको नसीब हुए या होंगे। तो दर हकीकत हाजी हजरत इब्राहिम अलैहिसलातु वस्सलाम के ऐलान का जवाब देते हुए यह कहता है कि لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ यानी में हाजिर हूं ऐ अल्लाह मे हाजिर हूँ।

मसाईले तलबिया

तलबिया का तक पढ़े

हज्जे तमत्तू में उम्राह का एहराम बांधने वाला मीकात से उमराह की नियत करके

तलबियाह पढ़ना शुरू करें और जब उमरा का तवाफ शुरू करें उस वक्त तलबिया पढ़ना बंद कर दें और हज का एहराम बांधने वाला हज की नियत करके तलबिया पढ़ना शुरू करें और १०/ जिलहिज्जा को जमरे अक्बा की रमी शुरू करने तक तलबिया पढता रहे। हज्जे इफ्राद और हज्जे किरान करने वाला तवाफ में तलबिया ना पढे, सई में तलबिया पढे और उसके बाद १०/ जिलहिज्जा को जम्रे अकबा की रमी शुरू करने तक तलबिया पढता रहे। (शामी)

तलबिया कितनी मर्तबा पढ़ना चाहिए

तलबिया एक मर्तबा पढ़ना तो एहराम के लिए शर्त है, और एक मर्तबा से जाईद यानी तीन मर्तबा पढ़ना सुन्नत है।

तमाम अहवाल और अवकात में तलबिया ज्यादा से ज्यादा पढ़ना

हर हालत में तलबिया ज्यादा से ज्यादा पढ़ना मुस्तहब है, मसलनः जब सवार हो, सवारी से उतरे, ऊंची जगह पर चढ़े, वहां से उतरे, सुबह के वक्त, इसी तरह हर नमाज के बाद और किसी से मुलाकात के

वक्त इन तमाम मवाके पर तलबिया कहना चाहिए, जितना ज्यादा पढ़े अफजल है। तलबिया के दरमियान बातचीत न की जाए।

एक शख्स का तलबिया पढ़ाना

अगर चन्द आदमी एक साथ हो तो इजतेमाइ तौर पर मसलन एक आदमी तलबिया पढ़ाए फिर कुछ लोग उसके बाद तलबिया के अल्फाज दोहराए इस तरह तलबिया ना पढे बलके हर शख्स अलाहीदा बजाते खुद तलबिया पढे।

अय्यामे तश्रीक में तलबिया किस तरह पढे ?

हुज्जाज के लिए अय्यामे तशरीक में फर्ज नमाज के बाद तलबिया पढ़ने का तरीका यह है के तकबीरे तश्रीक पढे फिर तलबिया पढ़े, और अगर किसी ने पहले तलबिया पढ़ लिया तो अब उसके जिम्मे से तकबीरे तश्रीक का वुजूब साकित हो जाएगा। (शामी)

एहराम की पाबंदियां

नियत और तलबिया पढ़ते ही अहराम की पाबंदियां शुरू हो जाएगी, मसलन (१)

खुशबू लगाना। (२) बाल या नाखून काटना।(३) मर्द को बदन की हालत पर सिला हुआ लिबास पहनना, औरतों के लिए ये पाबंदी नहीं है। (४) मर्द को सर या चेहरे का ढांकना, औरत अपना सर ढाक ले और सर पर हेट या कैप वाली टोपी पहनकर ऊपर से नकाब डालें ताकि नकाब का कपड़ा चेहरे पर ना लगे।(५) मर्द को ऐसा जूता पहनना जिससे पांव के दरमियान की हड्डी छुप जाए, औरतों के लिए यह पाबंदी नहीं है। (६) जू मारना। (७) शिकार

करना। (८) बीवी से जिमा करना या बे हयाई की बातें करना वगैरा।

मक्का मुकर्रमा में दाखिला

शौक से तलबियाह पढ़ते हुए मक्का मोअज्जमा में दाखिल हो और मक्का मुकर्रमा के हदूद में दाखिल होने के वक्त यह दुआ पढ़े:

"اَللّٰهُمَّ إِنَّ هَذَا حَرَمُكَ وَحَرَمُ رَسُولِكَ، فَحَرِّمْ لَحْمِي وَدَمِيْ وَعَظْمِي وَ بَشَرِى عَلَى النَّارِ اَللّٰهُمَّ اٰمِنِّىْ مِنْ عَذَابِكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ"

तर्जुमा: ए अल्लाह बेशक यह तेरा और तेरे रसूले पाक सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम का हरम है, पस तू मेरा गोश्त, खून, हड्डी, चमड़े को जहन्नम पर हराम फरमा। ऐ अल्लाह उस दिन के हिसाब से मेरी हिफाजत फरमा जिस दिन तू अपने बंदों को उठाएगा।

हरम शरीफ में हाजिरी

मक्का मुकर्रमा पहुंचने और रि हाइश वगैरा की इंतजामात मुकम्मल होने के बाद वुजू करके मस्जिदे हराम में हाजिरी के लिए

तैयार हो जाएं, जब मस्जिदे हराम में दाखिल हो तो दिल से पूरे अदब के साथ पहले दाया कदम रखें और यह दुआ पढ़े:

"بِسْمِ اللَّهِ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ رَبِّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي وَ افْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ"

और एतेकाफ की नियत करें और बगैर किसी को तकलीफ दिए आगे बढ़े। (गुनिय्या)

पहली नजर

जब बैतुल्लाह पर पहली नजर पड़े तो रास्ते से हटकर एक तरफ खड़े हो और यह काम करें:

(१) اَللّٰهُ اَكْبَرُ तीन मर्तबा कहे।

(२) لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ तीन मर्तबा कहे।

(३) दोनों हाथ दुआ के लिए उठाएं और दुरुद शरीफ पढ़कर खूब दुआ मांगे अपने लिए मुस्तजाबु द्दावात हो ने की भी दुआ मांग ले यह दुआ कबूलियत का खास वक्त है। (गुनिय्या)

तवाफ

तलबिया बंद

हज्जे तमत्तू करने वा ला जब उमराह का तवाफ शुरू करें तो तलबियाह पढ़ना बंद

कर दें। हज्जे इफ्राद और हज्जे किरान में सिर्फ तवाफ में तलबियाह पढ़ना बंद कर रखें और उसके बाद तलबिया पड़ता रहे १०/ जिलहिज्जा को जमरे अकबा (बड़े शैतान) की रमी शुरू करने पर तलबिया पढ़ना बंद कर दें।

इस्तिबा

उसके बाद इस्तिबा करें यानी चादर को दाहने बगल से निकालकर बाएं कंधे पर डालें और दाहना कंधा खुला रहने दे और तवाफ के सातों चक्करो में दाहना कंधा खुला

रहेगा और तवाफ बा वुज़ू जरूरी है।

नियते तवाफ

अब खाने काबा के सामने जिस तरफ हजरे अस्वद है इस तरह खड़े हो कि पूरा हजरे अस्वद आपकी दाहनी तरफ रह जाए, इस मकसद को हासिल करने के लिए हरी बत्ती से भी मदद ली जा सकती है चुनांचे हरी बत्ती से पहले बगैर हाथ उठाएं तवाफ की नियत करें: ऐ अल्लाह मैं आपकी रजा के लिए उमराह का तवाफ करता हूं आप इसको मेरे लिए आसान कर दीजिए और

कुबूल फरमा लीजिए।

इस्तीकबाल

फिर किबला रू ही दाहनी तरफ खिसक कर बिल्कुल हजरे अस्वद के सामने आएं और दोनों हाथ अपने कानों तक उठाएं और हथेलियों का रुख हजरे अस्वद की तरफ करें और कहें:

بِسْمِ اللّٰهِ، اللّٰهُ اَكْبَرُ، وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

और दोनों हाथ छोड़ दे।

इस्तीलाम

फिर इस्लाम करें या इस्तीलाम का इशारा

करे, इशारे की सूरत यह होगी कि दूर से दोनों हथेलियां हजरे अस्वद की तरफ इस ख्याल से करें कि वह हजरे अस्वद पर रखी हुई हैं फिर यह दुआ पढ़े:

اللہ ، اَکْبَرُلَآ اِلٰهَ اِلاَّ ا للّٰهُ وَالصَّلٰوةُ

وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ

और दोनों हथेलियां चूम ले। (गुनिया)

तवाफ शुरू

इस्तीलाम के बाद दाएं तरफ मुड़कर तवाफ शुरू करें।

हिदायत

हजरे अस्वाद, रुकने यमानी और मूलतजम

पर अक्सर खुशबू लगी होती है इसलिए हालते एहराम में उनको हाथ न लगाए जरा दूर ही रहें वरना दम वगैरह का खतरा है।

ताकीद

हजरे अस्वद के इस्तीलाम या इशारा के सिवा दौराने तवाफ खाने काबा की तरफ सीना या पीठ करना जायज नहीं है इसका खुसूसी ख्याल रखें।

रमल

अकड़ कर शाने हिलाते हुए करीब करीब कदम रखकर कदरे तेजी से चलें और सिर्फ

पहले तीन चक्करों में इस तरह चले बाकी चक्करों में हस्बे मा मूल चलेंगे और हजरे अस्वद से रुकने यमानी तक तीसरा कलमा पढ़े:

سُبْحَان اللّٰهِ وَالْحَمْدُلِلّٰهِ وَلا إِلٰهَ إِلّاَاللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ ولَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمَ

रुकने यमानी

चलते हुए जब रुकने यमानी पर आए तो उस पर दोनों हाथ या दाहना हाथ लगाना सुन्नत है, लेकिन उस वक्त हाथ को बोसा

नहीं दिया जाएगा। आजकल रुकने यमानी पर भी अक्सर खुशबू लगी होती हैं इसलिए हालते एहराम में हाथ लगाने का मौका मिले फिर भी हाथ न लगाए वरना दम वगैरा का खतरा है। और अगर भीड़ की वजह से करीब जाना मुश्किल हो तो दूर से इशारा भी ना किया जाए, आजकल बहुत से लोग दूसरों की देखा देखी रुकने यमानी से गुजरते हुए बुलंद आवाज से तकबीर पढ़ते हैं और हाथ को बोसा देते हैं यह सब खिलाफे सुन्नत है और रुकने यमानी से हजरे

अस्वद तक यह दुआ पढ़े:

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ، رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً، وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ وَأَدْخِلْنَا الْجَنَّةَ مَعَ الْأَبْرَارِ يَا عَزِيْزُ، يَا غَفَّارُ، يَا رَبَّ الْعَالَمِيْنَ

इस्तीलाम या इशारा

अगर आसानी के साथ मुमकिन हो तो हजरे अस्वद का इस्तीलाम करें वरना इशारा करके दोनों हथेलियां चूम ले हर चक्कर में हजरे अस्वद पर इस इस्तीलाम करे।

तवाफ खत्म

सात चक्कर पूरे होने पर आठवीं बार हजरे अस्वद का इस्तीलाम या इशारा करके तवाफ मुकम्मल करें।

इस्तिबा मौकूफ़

अब दोनों कांधे ढांक ले।

मकामे इब्राहिम

अब मकामे इब्राहिम के पीछे बगैर सर ढके दो रकात वाजिबु त्तवाफ अदा करें पहली रकात में सूरह काफिरून और दूसरी रकात में सूरह इखलास पढ़े और फिर दुआ करें।

मुल्तजम पर जाना

फिर मुल्तजम पर आ जाए और उससे चिमटकर और खूब गिड़गिड़ा कर दुआ करें एहराम की हालत में उससे न चिमटे क्योंकि उस जगह पर भी खुशबू लगी रहती है।

जमजम पीना

जमजम पिए और दुआ करें:

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا وَرِزْقًا
وَاسِعًا وَّشِفَاءً مِّنْ كُلِّ دَاءٍ

तर्जमा: ऐ अल्लाह मे आप से नफा देने वाला इल्म, कुशदा रोजी और हर बीमारी से शिफा मांगता हूं।

सई

नव्वा इस्तिलाम

फिर सई करने के लिए सफा पर जाने से पहले हजरे अस्वद की सीध में हजरे अस्वद का इस्तीलाम या इशारा करके दोनों हथेलिया चूम ले और सफा की तरफ रवाना हो जाए और सई बावुज़ू करना सुन्नत है।

सफा से सई का आग़ाज़

सफा पर सई की नियत करें: ऐ अल्लाह मैं आपकी रजा के लिए सफा मरवाह के दरमियान सही करता हूं उसको मेरे वास्ते

आसान कीजिए और हम्दो सना के बाद हाथ उठा कर दुआ करें नमाज की तकबीरे तेहरीमा की तरह कानों तक हाथ ना उठाएं बल के दुआ के लिए हाथ उठाएं और तीन मर्तबा बुलंद आवाज से

اَللّٰهُ اَكْبَرُ،اَللّٰهُ اَكْبَرُ،وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

पढ़ें, फिर तीन मर्तबा यह दुआ पढ़े:

لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ
الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ، أَنْجَزَ وَعْدَهُ،
وَنَصَرَ عَبْدَهُ، وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَه

मरवाह की तरफ रवानगी

सफा से उतरकर मरवाह की तरफ चले जब सब्ज़ बत्तियों के करीब पहुंचे तो मर्द हजरात दौड़े और खवातीन न दौड़े और यह दुआ पढ़े:

رَّبِّ ٱغْفِرْ وَٱرْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَم اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْاَكْرَمُ

मरवाह पहुंचकर

फिर मरवाह पहुंचकर किबला रुख होकर दुआ करें यह एक चक्कर हुआ दूसरा सफा पर और तीसरा चक्कर मरवाह पर मुकम्मल होगा।

सई का इख़्तिताम

इस तरह सातवां चक्कर मरवाह पर खत्म होगा हर चक्कर में मर्द हजरात हरी बत्तियों के दरमियान दौड़ेंगे लेकिन खवातीन नहीं दौड़ेगी और हर चक्कर में सफा और मरवा पर हाथ उठा कर दुआ करें।

नफ्ल शुकराना

अगर मकरूह वक्त ना हो तो शुकराने की दो नफल हरम में अदा करें यह नमाज सर मुंडवाने से पहले पढ़ी जाएगी।

हलक या कसर

सई के बाद मर्द हजरत सारे सर के बाल मुंडाए और खवातीन सर के बाल उंगली के एक पोर्वे की लंबाई से कुछ ज्यादा काट ले।

खवातीन का गैर महरम से बाल कटवाना

खवातीन अपने बाल खुद काटे या शोहर से कटवाए किसी गैर महरम से न कटवाए।

एक पोर्वे से कम बाल हो तो हलक जरूरी

जिस मर्द के सर में एक उंगली के पोर्वे से

कम बाल हो उसके लिए कसर (बाल कतरवाना) जाइज नहीं है बल्कि हलक (मुंडवाना) जरूरी है।

अपने हलक से पहले दूसरे का हलक करना

अगर चंद आबाब उम्राह के सब अर्कान अदा कर चुके हो और सिर्फ हलक बाकी रह जाए तो आपस में मिलकर एक दूसरे के बाल काट सकते हैं चाहे हलक करने वाले ने अभी तक अपने सर के बाल का हलक ना किया हो।

जिसके सर पर बिल्कुल बाल ना हो वह क्या करें ?

इसी तरह उमराह से फ़ारिग होकर एक मर्तबा सर मुंडा चुके और सर पर बाल नहीं है और दूसरा उमराह किया तो सर पर उस्तुरा फेरना जरूरी है चाहे सर पर बाल ना हो।

कैंची से कुछ बाल कतरवाना

मरवाह पर जो लोग कैची लिए खड़े रहते हैं उनसे सर के चंद बाल कतरवाना हनफी महरम के लिए काफी नहीं है लिहाजा उस

से परहेज करें वरना दम वाजिब होने का खतरा है।

उमराह मुकम्मल

हलक या कसर के बाद उमराह मुकम्मल हो गया, एहराम की पाबंदियां खत्म हो गई, अब सिले हुए कपड़े पहने और घर बार की तरह रहे दिलो जान से अल्लाह का शुक्र अदा करें कि उसने उमराह की सआदत बख्शी और बाकी लम्हाते जिंदगी की कद्र करें और उनको अपने रब की मर्जीयात के मुताबिक बसर करने की कोशिश करें।

न्फली उम्राह

आईंदा जब भी उमराह करना चाहे तो हदूदे हरम से बाहर तनीम (मस्जिदे आयशा) या जोराना वगैरह जा कर एहराम बाँधना होगा, फिर उम्राह का तवाफ और सफा मरवाह की सई करके हलक करे, नफ्ली उम्राह करके जिंदा व मरहूम रिश्तेदार वगैरह सब को इसाले सवाब कर सकते हैं।

नफ्ली तवाफ

मक्का मुकर्रमा में कयाम के दौरान जिस कदर हो सके नफली तवाफ करें बाहर से

आने वालों के लिए मस्जिदे हराम में नफल नमाज़ से न्फ्ल तवाफ करना अफजल है। हर तवाफ के बाद दो रकात वाजीबु त्तवाफ पढ़े, फिर उसके बाद दूसरा तवाफ शुरू करें नफल तवाफ में एहराम, रमल और इस्तिबा नहीं होगा और नफल सई भी ना होगी।

हज का तरीका

८ / ज़िल हिज्जा हज का पहला दिन

हज की तैयारी

८/ज़िलहिज्जा की रात को मीना जाने की तैयारी मुकम्मल कर लें, और जरूरी सामान

साथ ले जाएं, ज्यादा बोझ न करे, इसलिए के ७/ज़िलहिज्जा की रात से ही मुअल्लिम की बसो से मीना की तरफ रवांगी शुरू हो जाती है।

एहराम की तैयारी

मक्का मुकर्रमा मे अपनी कयाम गाह पर एहराम का गुस्ल करने से पहले नाखून कतरे, जेरे नाफ और बगल के बाल साफ करे और एहराम की नियत से गुस्ल करे अगर गुस्ल का मौका न हो तो वुज़ू करे।

एहराम की चादरे

फिर मर्द हजरत एहराम की दो सफेद चादरें पहने और खुशबू लगाएं मगर एहराम पर दाग न लगने पाए, और जूते उतारकर हवाई चप्पल पहने, खवातीन सिले हुए कपड़े न उतारे उनका एहराम सिर्फ यह है कि अपना सर ढाक ले और सर पर हैट या कैप वाली टोपी पहनकर ऊपर से नकाब डालें ताकि नकाब का कपड़ा चेहरे पर ना लगे।

एहराम की नियत से नफिल नमाज

फिर सर ढाक कर अगर मकरूह वक्त ना हो

तो दो रकात नफिल नमाज एहराम की नियत से पढ़े बेहतर है कि पहली रकात में सूरह काफिरून और दूसरी रकात में सूरह इखलास पढे।

खवातीन उस वक्त नापाकी के अय्याम में हो तो वह नमाज ना पढे।

नियत और तलबिया

अब अपना सर खोलकर इस तरह नियत करे,

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْٓ اُرِيْدُ الْحَجَّ فَيَسِّرْهُ لِىْ وَتَقَبَّلْهُ مِنِّىْ

तर्जमा: ए अल्लाह मे हज की नियत करता

हूं उसको मेरे लिए आसान कर दीजिए और कर लीजिए, फिर फौरन तीन मर्तबा लब्बैक कह और दुआ करे।

एहराम की पाबंदिया

अब एहराम की पाबंदिया शुरू हो गई, उनकी तफ़्सील ताजा करें और उनका खास ख्याल रखें।

मीना रवानगी

फिर मीना रवाना हो और रास्ते भर ज्यादा से ज्यादा तलबियाह पढ़ें और दीगर तस्बीहात पढ़ते रहे।

मीना में

मीना में आठवीं तारीख से ९ / जिलहिज्जा की फजर तक तमाम नमाजे अदा करें और रात मीना में रहे, मीना के खेमों में मर्दों और औरतों का इख़्तिलात न होने दें, बल्के दरमियान में चादर डालकर दोनों के हिस्से अलग अलग कर दें यह बहुत जरूरी है।

मीना, अरफात और मुज़्दलफ़ा में

नमज़ो मे कसर और इत्मामका हुक्म

जदीद तेहकीक के मुताबिक आजकल मक्का मुकर्रमा की आबादी मीना और मुज़्दलफा

तक पहुंच गई है, लिहाज़ा जो शख्स हज के लिए जाए और मक्का मुकर्रमा में उसका कयाम हज के पाँच दिन समेत १५ दिन और रातें या उससे ज्यादा हो तो उसे मक्का मुकर्रमा, मीना, मुज़्दलफ़ा तमाम जगहों में नमाज पूरी पढनी होगी, उसके लिए कसर का हुक्म नहीं है।

९ / ज़िलहिज्जा-हज का दूसरा दिन

अरफात रवानगी

नमाज़े फज्र मीना में अदा करें उसके बाद मर्द हजरात बुलंद आवाज से और खवातीन

आहिस्ता आवाज से एक मर्तबा तकबीरे तश्रीक:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، لَا اِلٰهَ اِلاَّ اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

कहे, और तीन मर्तबा लब्बेक कहे तकबीरे तशरीके ९ / जिल हिज्जा की फजर से १३/ज़िल हिज्जा की असर तक हर फर्ज नमाज के बाद पढ़ना वाजिब है, फिर अर्फ़ात जाने की तैयारी कर के ज़वाल होने से पहले तक अर्फ़ात पहुंच जाए।

फजाईले वुकूफ़े अर्फा

वुकूफ़े अर्फा फर्ज है और हज की रूह है। नबी ए करीम सल्लल्लाहो अलेही वसल्लम का इरशाद है:

اَلْحَجُّ عَرَفَةٌ

यानी हज दर हकीकत अर्फा ही है।

यवमे अर्फा अफजल तरीन दिन

(१) हजरत जाबिर रज़ियलाहु अन्हु से मर्वी है के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम ने इरशाद फरमाया अल्लाह की नजर में यवमे अर्फा से अफजल कोई दिन

नहीं है उस दिन अल्लाह ताला आसमानी दुनिया पर नुज़ूल फरमाते हैं और फिर फरिश्तों से फखर के तौर पर फरमाते हैं कि मेरे बंदो को देखो कि मेरे पास ऐसी हालत में आए हैं के सर के बाल बिखरे हुए हैं बदन पर और कपड़ों पर सफर की वजह से गुबार पड़ा हुआ है:

لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْك

का शोर है दूर दूर से चलकर आए हैं मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि मैंने उनके गुनाह माफ कर दिए फरिश्ते करते हैं कि या

अल्लाह! फुला शख्स गुनाहों की तरफ मनसूब है और फलां मर्द और औरत (तो बस क्या कहा जाए) हक ताला शानुहु का इरशाद होता है कि मैंने उन सब की मगफिरत कर दी। हुजूर सल्लाहु अलैही वसल्लम फरमाते हैं कि उस दिन से ज्यादा किसी दिन भी लोग जहन्नम से आजाद नहीं होते। (मिश्कात)

(२) दूसरी हदीस में है के हक ताला शानुहू फरमाते हैं यह मेरे बंदे बिखरे हुए बालों वाले मेरे पास आए हैं मेरी रहमत के

उम्मीदवार हैं, उसके बाद बंदो से खिताब फरमाते हैं अगर तुम्हारे गुनाह रेत के ज़र्रो के बराबर हो और आसमान की बारिश के कत्रों के बराबर हो और तमाम दुनिया के दरख्तों के बराबर हो तब भी बख्श दिए, जाओ, बख्शे बख़्शाये अपने घर चले जाओ। (कंजुल उम्माल)

गुस्ल

अरफात पहुंचकर गुस्ल करें वरना वुज़ू करें और खाने वगैरह से फ़ारिग हो जाए और कुछ देर आराम करें।

वुक़ूफ़े अर्फात

ज़वाल होते ही वुकूफ़ शुरू करें और शाम तक लब्बेक पढ़ने, दुआ, तोबा और इस्तिगफार करने, अल हिजबुल आज़म,मुनाजात मकबूल और अफ़ीत के मामूलात पढ़ने में गुजारे, वुकूफ़ खड़े होकर करना अफजल है और बैठकर भी जायज है।

वुक़ूफ़े अर्फात का वक्त

वुकूफ़े अर्फात का वक्त ९ / ज़िलहिज्जा के ज़वाल से १०/ जिलहिज्जा की सुबह सादिक

तक है और गुरूबे आफताब तक अरफात में कयाम करना वाजिब है।

ज़ोहर और असर की नमाज़

अपने खेमो में जोहर की नमाज जोहर के वक्त असर की नमाज के वक्त अजान और तकबीर के साथ बा जमात अदा करें।

मस्जिद ए नमीराह में ज़ोहर और असर जमा करना

जो लोग मस्जिद ए नमीराह में इमामे अर्फ़ात के पीछे नमाज़े पढे वह ज़ोहर और असर दोनों नमाज जोहर के वक्त में अदा

करेंगे ज़ोहर के लिए अजान और इकामत होगी फिर ज़ोहर पढ़ी जाएगी उसके बाद फौरन असर की इकामत कही जाएगी और असर की नमाज अदा की जाएगी और दोनों के दरमियान कोई नफल या सुन्नत नमाज नहीं पढ़ी जाएगी, और असर के बाद भी कोई नफिल नमाज पढ़ना दुरुस्त ना होगा।

इमाम मुसाफिर हो तो मुकीम हुज्जाज कैसे नमाज पढ़े ?

अगर इमाम उल हज अराफात में मुसाफिर होने की वजह से जोहर और असर की

नमाज़े दो दो रकात कसर पढाये तो मुकीम हुज्जाज इमाम के सलाम फेरने के बाद हस्बे दस्तूर अपनी चार रकात नमाज़े पूरी करेंगे।

अरफात का अमल

अरफात के मैदान में यह अमल करें:

(१) सौ मर्तबा:

لَآ اِلٰهَ اِلاَّ اللّٰهُ وَحْدَهُ لَاشَرِيْکَ لَهُ لَهُ
الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْی وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ
لَّا يَمُوْتُ اَبَدًا اَبَدًا ذُوالْجَلَالِ وَالْاِکْرَامِ
بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَعَلٰى کُلِّ شَيْئٍ قَدِيْر

(२) सौ मर्तबा सूरह इखलास यानी:

قُلْ هُوَاللّٰهُ أَحَدٌ،اَللّٰهُ الصَّمَدِ، لَمْ يَلِدْ
وَلَمْ يُوْلَدْ، وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا أَحَدٌ

(३) सौ मर्तबा दुरूदे इब्राहिमी यानी:

اَللّٰهُمَّ صَلَّ عَلىَ مُحَمَّدٍ وَّ عَلىَ آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيتَ عَلىَ اِبرَاهِيمَ وَعَلىَ آلِ اِبرَاهِيمَ اِنَّكَ حَميدٌ مَّجِيدٌ.اَللّٰهُمَّ بَارِك عَلىَ مُحَمَّدٍ وَّ عَلىَ آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَاركتَ عَلىَ اِبرَاهِيمَ وَعَلىَ آلِ اِبرَاهِيمَ اِنَّكَ حَميدٌ مَّجِيدٌ وَ عَلَيْنَا مَعَهُ

हदीस शरीफ में मौजूद है कि जो शख्स ये औराद पढे तो अल्लाह ताला फरमाते हैं ऐ

मेरे फरिश्तों मेरे इस बंदे की जज़ा क्या है? उसने मेरी पाकी बयान की, मेरी वहदानियत का ऐलान किया मेरी बढ़ाई और अजमत का इजहार किया और मुझे पहचान कर मेरी हम्दो सना की और मेरे नबी सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम पर दुरूद भेजा, फरिश्तों गवाह रहना इस बंदे की मैंने मगफिरत कर दी है और उसकी जात के बारे में उसकी सिफारिश मान ली है और अगर मेरा यह बंदा सारे अरफात में ठहरने वालों के लिए कोई दरख्वास्त करेगा उनके बारे में भी मैं

उसकी सिफारिश कबूल कर लूंगा। (कनज़ुल उम्माल)

मुज़्दलफ़ा रवानगी

जब अर्फ़ात में सूरज डूब जाए तो नमाज पढ़े बगैर जिक्र करते हुए रवाना हो जाए लेकिन सूरज डूबने से पहले अरफात से निकलना नहीं है वरना दम वाजिब होगा।

मग्रिब और ईशा की नमाज

मुज़्दलफ़ा मे मग्रिब और ईशा की नमाज मिलाकर ईशा के वक्त में अदा करें दोनों के लिए एक अज़ान और एक इकामत कही

जाए, पहले अजान और इकामत कह कर मगरिब की नमाज अदा करें फिर एक मर्तबा तकबीरे तश्रीक और तीन मर्तबा लब्बैक कहे उसके बाद अजान और इकामत कहे बगैर ईशा की फ़र्ज़ नमाज जमात के साथ अदा करें, उस के बाद मग्रिब की दो सुन्नत फिर ईशा की दो सुन्नत और वित्र पढ़ें।

ज़िक्रो दुआ

बड़ी मुबारक रात है बाज उलमा ने उसे शबे कद्र से भी अफजल बताया है उसमें जिक्र और तिलावत, दुरूद शरीफ और लब्बैक

पढ़ें, और खूब दुआ करें और कुछ देर आराम करें।

कंकरिया

शैतान की रमी के लिए एक बड़े चने के दाने के बराबर सत्तर (७०) कंकरिया चुने, और उन्हें धोकर रख ले।

नमाजे फजर और वुकूफ़

सुबह सादीक होने पर अजान देकर सुन्नत पढ़कर फज्र की नमाज अदा करें और वुकूफ़ करें।

वुकूफ़े मुज़्दलफ़ा का वाजिब वक्त

वुकूफ़े मुज़्दलफ़ा का वाजिब वक्त

१०/ज़िलहिज्जा की सुबह सादिक से तुलु आफताब तक है।

मीना वापसी

जब सूरज निकलने वाला हो तो मीना रवाना हो जाए।

१०/ जिल हिज्जा हज का तीसरा दिन

जमरे अकबा की रमी

मीना पहुंचकर जमरे अकबा पर सात कंकरिया अलग अलग मारे। हर कंकरी मारते वक्त यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ رَغْمًا لِلشَّيْطَانِ وَ رِضًا

لِلرَّحْمنِ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لِيْ حَجّاً مَبْرُورًا وَ ذَنْبًا مَغْفُورًا وَسَعْيًا مَشْكورًا

तलबिया बंद

जमरे अकबा को कंकरी मारते ही लब्बैक कहना बंद कर दें और रमी के बाद दुआ के लिए ना ठहरे, यूं ही कयाम गाह चले आए। उसके बाद कुर्बानी करें।

कुर्बानी

कुर्बानी के ३ दिन मुकर्रर है, १०,११,१२ जिल हिज्जा दिन में रात में जब चाहे कुर्बानी करें और कुर्बानी खुद करें या किसी मौतमद

शख्स के जरिए करवाएं।

हज और ईद उल अजहा की कुर्बानी

यह हज की कुर्बानी है, यह उस कुर्बानी के अलावा है जो आप वतन में साहिबे निसाब होने की वजह से करते हैं वह ईद उल अजहा की कुर्बानी है, जो साहिबे निसाब और मुकीम पर वाजिब है, वह भी करनी है, अलबत्ता ईद उल अजहा यानी वतन वाली कुर्बानी में इख़्तियार है कि उसका इंतजाम आप वतन ही में कर दें लेकिन हज की कुर्बानी मक्का मुकर्रमा में हुददे हरम ही

में करनी होगी।

हलक या कसर

कुर्बानी से फारिग होकर मर्द पूरा सर मुंडवाए और खवातीन उंगली के पोर्वे से कुछ ज्यादा बाल काट दे अब एहराम की पाबंदी खत्म हो गई अभी औरत हलाल नहीं होगी, औरत तवाफ़े जियारत के बाद हलाल होती है।

रमी, कुर्बानी और हलक में तर्तीब वाजिब है

हनफी मसलक में इन तीनों में तर्तीब वाजिब है यानी पहले शैतान को कंकरिया

मारे, फिर कुर्बानी करें, उसके बाद हलक होगा अगर उसके खिलाफ होगा यानी तरतीब से तीनों वाजिब अदा न किए तो दम वाजिब होगा।

तवाफे जियारत

अब तवाफे जियारत करें, उसका वक्त १०/ज़िल हिज्जा से १२/ जिल हिज्जा के गुरुबे आफताब तक है दिन में या रात में जब चाहे करें उमूमन ११/ज़िलहिज्जा को आसानी रहती है अगर पहले हज की सई न की हो तो तवाफे जियारत के बाद सई

करनी होगी और इस तवाफ के शुरू के तीन चक्कों में रमल (अकड कर चलना) होगा और तवाफे जियारत सिले हुए कपड़े पहनकर होता है तो इस्तिबा न होगा और सई भी सिले हुए कपड़ों में होगी और तवाफे जियारत बावुज़ू जरूरी है।

तवाफे जियारत के वक्त औरत नापाक हो

जो औरत नापाक हो और १२/ज़िलहिज्जा के गुरुबे आफताब तक पाक ना हो तो बाद में पाक होने पर तवाफ़े जियारत करें इस ताख़ीर

में उस पर कोई दम वाजिब ना होगा।

हज की सई

उसके बाद सई करें, सई का वही तरीका है जो उमराह की सई का है और बावुज़ू करना सुन्नत है।

मीना वापसी

सई से फारिग होकर मीना वापस आ जाएं और रात मीना ही में बसर करें।

११/ जिलहिज्जा- हज का चौथा दिन

जम्रात की रमी

ग्यारह तारीख को ज़वाल के बाद तीनों

जमरात पर सात कंकरिया मारनी है, उमूमन गुरूबे आफताब से रात में रमी करना आसान होता है। आज की रमी का वक्त ज़वाल के बाद शुरू होता है और १२/ज़िल हिज्जा की सुबह सादिक तक रहता है हर कंकरी मारते वक्त यह दुआ पढ़े दुआ पढ़े:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ رَغْمًا لِلشَّيْطَانِ وَ رِضًا
لِلرَّحْمٰنِ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لِيْ حَجًّا مَبْرُوْرًا وَ
ذَنْبًا مَغْفُوْرًا وَسَعْيًا مَشْكُوْرًا

दुआ करे

जमरे ऊला पर सात कंकरिया मार कर जरा

सा आगे किब्ला रु होकर और हाथ उठाकर हम्दो सना करके जो दिल चाहे दुआ करें कोई खास दुआ जरूरी नहीं है।

दुआ करें

उसके बाद जमरे वूस्ता पर सात कंकरिया मारे और किब्ला रू खड़े हो कर अल्लाह ताला की हम्दो सना करके खूब दुआ करें, यहां भी कोई हाथ दुआ जरूरी नहीं है।

दुआ ना करे

उसके बाद जमरे अकबा पर सात कंकरिया मारे और रमी के बाद बगैर दुआ किए

अपनी एक कयाम गाह वापस आ जाए।

जिक्र और इबादत

कयाम गाह में आकर तिलावत, जिकरुल्लाह, तौबा इस्तिगफार और दुआ में मशगूल रहे और गुनाहों से दूर रहे।

१२/ जिल हिज्जा हज का पांचवा दिन

जमरात की रमी

तीनो जमरात को जवाल के बाद सात सात मर्तबा कंकरिया मारे, आज की रमी का वक्त

भी ज़वाल के बाद ही शुरू होता है और १३/ जिलहिज्जा कि सुबह सादिक तक रहता है। मगरिब के बाद रमी करके मीना से निकलना जायज है, दम वाजिब ना होगा, १३/ जिलहिज्जा की सुबह सादिक तक मीना में रुक गए तो १३/ज़िलहिज्जा की रमी वाजिब हो जाएगी, और १३/ज़िलहिज्जा को इमाम अबू हनीफा के नजदीक सुबह सादिक से गुरुब तक रमी कर सकते हैं, अलबत्ता जवाल से पहले रमी करना मकरूहे तंजीही है और हजराते साहिबैन के नजदीक

जवाल से पहले जायज नहीं है लिहाजा जवाल के बाद बिल इत्तेफाक जायज है इसलिए १३/जिलहिज्जा को भी जवाल के बाद तीनों शैतान को ११,१२/ जिलहिज्जा की तरह कंकरिया मारे।

दुआ करे

जमरे ऊला पर सात कंकरिया मार कर जरा सा आगे किब्ला रु होकर और हाथ उठाकर हम्दो सना करके खूब दुआ करें, हर कंकरी मारते वक्त यह दुआ पढ़े दुआ पढ़े:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ رَغْمًا لِلشَّيْطَانِ وَ رِضًا

لِلرَّحْمنِ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لِیْ حَجّاً مَبْرُورًا وَ
ذَنْبًا مَغْفُورًا وَسَعْيًا مَشْكورًا

दुआ करें

उसके बाद जमरे वूस्ता पर सात कंकरिया मारे और किब्ला रू खड़े हो कर अल्लाह ताला की हम्दो सना करके खूब दुआ करें, यहां भी कोई खास दुआ जरूरी नहीं है।

दुआ ना करे

उसके बाद जमरे अकबा पर सात कंकरिया मारे ल, उसके बाद दुआ न करे।

इख़्तियार

१२ की रमी के बाद इख़्तियार है मीना में मजीद कयाम करें या मक्का मुकर्रमा आ जाए।

तवाफ़े विदा

हज के बाद मक्का मुकर्रमा से वतन वापसी का इरादा हो तो तवाफे विदा वाजिब है, इस तवाफ का तरीका आम नफल तवाफ की तरह है।

तवाफे जियारत के बाद नफल तवाफ भी तवाफे विदा है

तवाफे जियारत के बाद किया गया नफल तवाफ भी तवाफ़े विदा के कयिम मकाम हो जाता है।

तवाफ़े विदा के वक्त औरत का नापाक होना

जो औरत तवाफे विदा के वक्त नापाक हो तो उससे तवाफे विदा साकित हो जाता है।

मुनाजात

शुक्र है तेरा खुदाया मैं तो इस काबिल न था।

तूने अपने घर बुलाया मैं तो इस काबिल न था।

अपना दीवाना बनाया, मैं तो इस काबिल न था।

गिर्द काबा के फिराया मैं तो इस काबिल न था।

मुद्दतों की प्यास को सैराब तूने कर दिया।

जाम जमजम का पिलाया, मैं तो इस काबिल न था।

डाल दी ठंडक मेरे सीने में तू ने साकिया।

अपने सीने से लगाया, मैं तो इस काबिल न था।

भा गया मेरी जुबान को जिक्र इल्लल्लाह का।

यह सबक किसने पढ़ाया, मैं तो इस काबिल न था।

खास अपने दर का रखा तूने ए मौला मुझे।
यूं नहीं दर-दर फिराया, मैं तो इस काबिल न था
मेरी कोताही के तेरी याद से ग़ाफ़िल रहा।
पर नहीं तूने बुलाया, मैं तो इस काबिल न था।
मैं के था बेराह तूने दस्तगिरी आप की।
तू ही मुझको राह पे लाया, मैं तो इस काबिल न था।
अहद जो रोज़े अजल तुझसे किया था याद है।
अहद वो किसने निभाया, मैं तो इस काबिल न था।
तेरी रहमत, तेरी शफकत से हुआ मुझको नसीब।

गुंबदे खजरा का साया, मैं तो इस काबिल न था।
मैंने जो देखा सो देखा जलवा गाहे कुदस मैं।
मैं जो पाया सो पाया, मैं तो इस काबिल न था।
बारगाहे सेईदुल कौनैन में आकर।
सोचता हूं कैसे आया, मैं तो इस काबिल न था।

नात

है नजर में जमाले हबीबे खुदा।
जिसकी तस्वीर सीने में मौजूद है।
जिसने लाकर कलामे इलाही दिया।
वो मोहम्मद मदीने में मौजूद है।
फूल खिलते हैं पढ़ पढ़ के सल्ले अला।

झूम कर कह रही है यह बादे सबा।
ऐसी खुशबू चमन के गुलों में कहां।
जो नबी के पसीने में मौजूद है।
हमने माना के जन्नत बहुत है हसीन।
छोड़ कर हम मदीना न जाएं कहीं।
यूं तो जन्नत में सब कुछ मदीना नहीं।
पर मदीने में जन्नत भी मौजूद है।

नात

ऐ इश्के नबी मेरे दिल में भी समा जाना।
मुझको भी मोहम्मद का दीवाना बना जाना।
जो रंग के रूमी पे राजी पे चढ़ाया था।

उस रंग की कुछ रंगत मुझ पर भी चढ़ा जाना।
जिस नींद में हो जाए दीदारे नबी हासिल।
ऐ इश्क कभी मुझको वो नींद सुला जाना।

नात

बुला लो अब तो ऐ आका ठेहेर जाना नहीं अच्छा।
तड़प कर यूं दिले मुज़तर का मर जाना नहीं अच्छा।
मदीने का इरादा हो तो इश्के नबवी पैदा कर।
ताल्लुक हो ना जिनसे उनके घर जाना नहीं अच्छा।

मदीना तैय्यबा की हाजरी

मस्जिद ए नबवी की ज़ियारत और

दरबार ए नुबुवत मैं हाज़री

हज्ज ओ उमरा से फारिग होने के बाद सब से अहम और अफजल काम सैय्यदुल अंबिया, रहमत ए आलम, रसूल ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मस्जिद ए नबवी की जियारत और दरबार ए अकदस में हाजरी की सादात है, महबूब ए रब्बुल आलमीन, ताजदार ए मदीना, मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की

मुहब्बत ओ अज़मत वो चीज़ है जिसके बेगैर ईमान मुकम्मल नहीं हो सकता। इसका तबी तकाजा तो यह होना चाहिए के दियार ए मुकद्दस मैं पूछने के बाद दरबार ए रिसालत मैं हाजरी के बेगेयर घर वापसी ना हो, ये वो दोलत ए उजमा है के जिसकी हुसूल याबी पर एक सच्चा आशिक ए रसूल, उम्मती अपनी किस्मत की बुलंदी पर बजा तोर पर नाज कर सकता है, अलावाह आजी रोजा ए मुताहर पर हाजिर हो कर सलात ओ सलाम का नजराना पेश करने के

अजीमुशान फायदे और फजैल है।

फ़ज़ाईल ए ज़ियारत ए रोज़ा ए अक़दस

(१) हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न इरशाद फरमाया:

مَنْ زَارَ قَبْرِيْ وَجَبَتْ لَهُ شَفَاعَتِيْ

तर्जमा: जिस शाख्स ने मेरी क़बर की ज़ियारत की उसके लिए मेरी शिफ़ा और वाजिब है। (बैहाकी)

(२) हजरत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया के: जो शाख्स सिर्फ मेरी जियारत के लिए मेरे पास आए

तो मुझ पर हक हो गया के माई कयामत के दिन उसका सिफार्षी बनुगा। (अल बहरुल अमीक)

(३) हजरत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया के:

مَنْ زَارَنِيْ بَعْدَ وَفَاتِيْ عِنْدَ قَبْرِيْ فَكَاَنَّمَا زَارَنِيْ فِيْ حَيَاتِيْ

तर्जमा: जिस शाख्स ने मेरी वफात के बाद मेरी कब्र की जियारत की तो गोया उसकी मेरी जिंदगी में मेरी जियारत का शरीफ हासिल किया। (मिश्कात)

इन इरशादात को पढ़ने और सुनने के बाद वो कौन सा मुसलमान होगा जो बेगैर किसी माईबुरी के इस सदात ए कुबरा से महरूम हो कर घर वापस चला जाए।

नियत ए सफर ए मदीना

जब मदीना मुनव्वरा का सफर शुरू करे तो इस तरह नियत करे: ऐ अल्लाह माई नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मजार ए मुबारक और मस्जिद ए नबवी की जियारत के लिए मदीना मुनव्वरह का सफर करता हूं, ऐ अल्लाह इसे कुबूल फरमा लीजिए।

एहतिमाम ए सुन्नत

सफर ए मदीना मैं सुन्नतो पर अमल का खास खयाल राखे।

दुरूद शरीफ

इस सफर में दुरूद शरीफ ब कसरत पढ़े।

मदीना मैं

मदीना तैय्यबा की आबादी नजराने पर शोक ए दीद ज्यादा करे और दुरूद ओ सलाम खूब पढ़े हुए आजिजी से दाखिल हो और ये दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ هٰذَا حَرَمُ نَبِيِّكَ فَاجْعَلْهُ لِيْ وِقَايَةً مِّنَ

النَّارِ وَأَمَانًا مِّنَ الْعَذَابِ وَسُوْءِ الْحِسَابِ

तर्जमा: ऐ अल्लाह ये आपके नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हरम है इस हरम को मेरे लिए जहन्नम से खलासी का ज़रिया बना दे और इस को मेरे लिए जहन्नम के अज़ाब से और बुरे हिसाब ओ किताब से हिफ़ाज़त का ज़रिया बना दे।

मस्जिद ए नबवी

क़याम गाह पर समान रख कर गुस्ल करे वरन वुज़ू करे, अच्छा लिबास पहनने, खुश्बू लगाये और अदब ओ एहतेराम से दुरूद

शरीफ़ पढ़ते हुए मस्जिद ए नबवी की तरफ चले।

मस्जिद ए नबवी माई दखला

बाब ए जिब्राईल या बाबुस सलाम चेतावनी किसी भी दरवाजे से दहना क़दम रख कर मस्जिद ए नबवी माई दखिल हो और ये दुआ पढ़े:

بِسْمِ اللّٰهِ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ رَبِّ اغْفِرْلِيْ ذُنُوْبِيْ وَ افْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

और एतिकाफ की नियत करें और बेगैर

किसी को तकलीफ दिए आगे बढ़े।

नफल नमाज़

अगर मकरू वक्त ना हो तो रियाज जन्नत में मेहरब ए नबी के पास वरना किसी को भी जगह दो राकात तहियातुल मस्जिद पढ़े और फिर दिल ओ जान से अल्लाह ताला की हम्द ओ सना कर के दुआ करे और तोबा करे।

रोज़ा ए मुबारक पर हाज़री

अब इंतिहायी खुशू ओ खुज़ू, अदब ओ एहतेराम के साथ रोज़ा ए अक़दस की तरफ

चले और जालियों के सामने सुरक्षा के आगे तीन चार हाथ फासले से खड़े हो जाए और नज़रे झुका ले।

दुरूद ओ सलाम

और क़बर ए मुबारक के सामने एक बार ये आयति तलावत करें:

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلاَئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

उसके बाद (७०) मर्तबा दुरूद शरीफ पढ़े:

صَلَّى اللهُ عَلَيْکَ وَسَلَّمَ يَا رَسُوْلَ اللهِ

और दरमियानी आवाज़ से इस तरह सलाम अर्ज करे।

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللهِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَانَبِيَّ اللهِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَاحَبِيْبَ اللهِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَاخَيْرَخَلْقِ اللهِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ يَارَسُوْلَ اللهِ،

اَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ أَشْهَدُ اَنَّكَ عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ،

اَشْهَدُ أَنَّكَ قَدْ بَلَّغْتَ الرِّسَالَةَ وَاَدَّيْتَ الْأَمَانَةَ وَنَصَحْتَ الْأُمَّةَ وَكَشَفْتَ الْغُمَّةَ، فَجَزَاكَ اللّٰهُ عَنَّا خَيْرًا، جَزَاكَ اللّٰهُ عَنَّاأَفْضَلَ وَأَكْمَلَ مَا جَزٰى بِهٖ نَبِيًّا عَنْ أُمَّتِهٖ

दुआ

उसके बाद हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से शिफा पर कि अंधेरख्वास्त करें और तीन बार कहें:

اَسْئَلُکَ الشَّفَاعَةَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه

और आप के वसीले से दुआ करे जिस में हुस्न ए कहतमा, अल्लाह ताला की रजा और

मगफिरत बा तोर ए खास मांगे। (गुनियाह)

दूसरे का सलाम

उसके बाद जिस अज़ीज़ या दोस्त का सलाम कहना हो इस तरह अर्ज करे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ مِنْ فُلَانِ بْنِ فُلَانِ

(फूला इब्न ए फुला) की जगह उस अज़ीज़ का नाम वालदियात के साथ अदा करें।

हज़रत सिद्दीक़ ए अकबर रज़ी अल्लाहु अन्हु पर सलाम

उसके बाद दायी तरफ जालीयो मैं दूसरे

सूरज के सामने खड़े हो कर इस तरह सलाम अज करे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَنَا أَبَا بَكْرِ الصِّدِّيْقِ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَاخَلِيْفَةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ

جَزَاکَ اللّٰهُ عَنْ أُمَّةِ مُحَمَّدٍ ﷺ خَيْرًا

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ी अल्लाहु अन्हु पर सलाम

उसके बाद फिर जरा दाई तरफ टोपी कर तीसरे सूरज के सामने खड़े हो कर इस तरह सलाम अर्ज करे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ

جَزَاکَ اللّٰهُ عَنْ أُمَّةِ مُحَمَّدٍ ﷺ خَيْرًا

दोनो की खिदमत माई

उसके बाद जरा बायी तरफ बढ़ा कर दोनो हजरत ए खुलफा के बीच में कहे:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَا وَزِيْرَیْ رَسُوْلِ اللّٰهِ

جَزَاكُمَا اللّٰهُ اَحْسَنَ الْجَزَاءِ

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत माई

उसके बाद फिर जरा बायी तरफ बढ़ा कर

पहले सूरज के सामने आजाए, और ज़ोक ओ शौक से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत माई दुरूद ओ सलाम पेश करें जिसके अल्फाज ऊपर लिखे गए हैं और अपने लिए एहल ओ एयाल और वगैराह के लिए अल्लाह ताला से दुआ करे।

दुआ

उसके बाद मस्जिद ए नबवी में ऐसी जगह चले जाए के क़िबला रू होने में रोज़ा ए अक़दस की पीठ ना हो और अल्लाह ताला से ख़ूब रो कर दुआ करे, सलाम अर्ज़ करने

का यही तरीका है।

रियाजुल जन्नत

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुजरा ए मुबारक और मिम्बर के दरमियानी जगह "रियाजुल जन्नत" कहलाती है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसकी अजमत को ब्यान करते हुए इरशाद फरमाया:

مَابَيْنَ بَيْتِيْ وَمِنْبَرِيْ رَوْضَةٌ مِنْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ

तर्जमा: मेरे घर और मेरे मिम्बर के दरमियान

जन्नत की कियारियों में से एक कियारी है। (बुखारी)

जो शेख्स इस मक़ाम पर जा कर नमाज़ पढ़ेंगे और ज़िक्र ओ इबादत में मशगूल होगा उसके लिए जन्नत में जाना बिल्कुल आसान हो जाएगा। और वहा पर जगह मुश्किल से मिलती है, भीड़ काफी होती है, अल्लाह से दुआ कर के इस जगह पोचने की कोशिश की जाए। और अक्सर उलमा के नाज़दीक ज़मीन का ये टुकड़ा क़यामत के दिन जन्नत में चलेगा। (अनवर ई मनासिक)

सुतून हाये रियाजुल जन्नत

रियाजुल जन्नत के मुकद्दस इहाते मा ई 6 आश्वासन बने हुए हैं, हर आश्वासन पर नाम भी लिखा हुआ है। ये तारीख़ सुतून है, उनको देखना चाहिए और उनके क़रीब इबादत का एहतिमाम भी करना चाहिए। उन माई से हर एक की एक तारीख झिझक है। उमुमन बोहट से लोग हमें तरफ तवज्जु नहीं देते या कहते हैं कि बोहत तो हमें के बारे में मालूम भी नहीं होता। अक्सर चू के रियाजुल जन्नत में जगह की तलाश में

मुंतजिर खड़े रहते हैं और जैसे ही जगह मिले इबादत में लग जाते हैं और फिर पीछे से उठने और वहां से हटने का तकाजा होता है तो लोग निकल जाते हैं। हमें चाहिए के उन सुझावों को देखें और उन की तारीख अहमियत को ज़हन ओ दिमाग में ताज़ा करें, सहूलत हो तो उनके क़रीब नफ़ल वगैरा पढ़ले। हम यहां उनका मुख्तसर तारीफ नकल कर रहे हैं।

सुतून ई हन्नाना

सुतून ए हन्नाना वो सुतून है जो खजूर के

तने का था, मस्जिद ए नबवी में मिम्बर बनने से क़ाब्ल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसि सतून से तिक लगा कर ख़ुत्बा और वाज़ ओ नसीहत फरमाया करते थे। जब मिम्बर बन गया और तनाव को छोड़ कर मिम्बर पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जलवाह अफरोज हो कर खुत्बा देने लगे तो ये सुतून बकैदा आवाज से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जुदाईगी पर रोने लगा तो नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसको आपने देखा से

लगा लिया तो उसका रोना बंद हुआ। एक उपाय के हमारे रोने से मस्जिद गूंज गई। दूसरी समस्या में है के उसके रोने से और उसकी हाल से मस्जिद वाले भी रोने लगे।

सुतून ए अबी लुबाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

हज़रत अबू लुबाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जलील उल क़द्र सहाबी है। गज़वा ए ताबुक के मौके पर उनसे कोई खाता सादिर हो गई थी, तो उनको खुद को आप को मस्जिद ए नबवी सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम के इस तनाव से बंद दिया था, जो आश्वासन ए अबू लुबाबा से मशहूर हो गया। और अनहोने ये अहद किया था जब तक हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लुद नहीं खोलेंगे बंधा रहुगा। और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी ये फरमाया था के जब तक खुदा की तरफ से मुझे हुक्म न होगा में भी नहीं खोलुगा। ख्वाह इसी हलत में मुझे मौत आ जाए। चुनांचे रोज मुकममल इसी तरह बंधे रहे, उनकी बीवी या बेटी निगाहदाश्त करती थी,

इंसानी जरूरत और नमाज के वक्त खोल देती और फरिग होने के बाद दोबारा बांध देती थी, खाने पीने के करीब तक ना जाते यहां तक के गशी तारि हो जाति थी, जब अल्लाह ताला ने क़ुरआन में उनकी तौबा की कुबूलियत का ऐलान फरमाया। तो हुजूर सल्लल्लाहु अलै हि वसल्लम ने बनाफसे नफीस अपने दस्त ए मुबारक से खोल दिया। क्या सूट को उस्तुवाना ए तौबा भी कहा जाता है। इस जग तौबा की क़ुबूलियत क़ुरआन से साबित है, इसीलिये

यहाँ दो रकत नमाज़ पढ़ कर तौबा वा इस्तिगफार और दुआ करना चाहिए।

सुतून ई वूफ़ूड

सूटून ए वुफूड वोह तनाव है जिस के पास बेथ कर बाहर से आने वाले क़बा ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दस्त ए मुबारक पर इस्लाम की शर्त की है। ये सुतून हुजरा ए आयशा रज़ी अल्लाहु अन्हा और हुजरा ए फ़ातिमा रज़ी अल्लाहु अन्हा की दीवार से मुत तसिल है।

सुतून ई हरस

आश्वासन ए हरास जो हुजरा ए आयशा रज़ी अल्लाहु अन्हा की दीवारों से मुत तसील है। हिजरत के बाद शुरू शुरू में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरवाजे पर पहरा दिया जाता था। तो पहरा देने वाले इसी सूतून के पार बेथ जाते थे, बाद में अल्लाह ताला ने कुरान करीम में एलान फरमाया के आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मि हिफाजत अल्लाह ता ला खुद फरमायेंगे। कुरानी एलान के बाद ये पहरे

का सिलसिला खत्म हो गया।

सुतून ई जिब्रील

हज़रत जिब्रील ए अमीन अलैहिस्सलाम जब वही ले कर हज़रत देह कलबी रज़ी अल्लाहु अन्हु की शकल में तशरीफ़ लाते तो अक्सर ओ बेश्तर इसि सुतून के पास बेठे नज़र आते थे, इस जगह को मक़ाम ए जिब्रईल भी कहते हैं। क्या जगह भी दुआ बहुत ज्यादा कुबूल होती है।

सुतून ए सरीर

सुतून ए सरीर वो है जहां नबी करीम

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एतेकाफ फरमाया करते थे, और आराम के लिए इसी जगह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बिस्तर बिच्छू दिया जाता था। ये चू के नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के एतकाफ की जगह है इस लिए यहां भी दुआ बोहत ज्यादा कुबूल हटी है।

सुतून ई आयशा

एक दफा नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया के मेरी मस्जिद में एक जगह ऐसी है के हमें जगा नमाज

पढ़ने की फजीलत अगर लोगो को मालूम हो जाए तो नंबर लगाने के लिए कुरा अंदाज की नोबत आ जाएगी। उसके बाद सहाबा किरम रज़ियल्लाहु ता ला अनहम को हमें जग की बसजू रहती थी। नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अपने भांजे हज़रत अब्दुल्लाह बि न ज़ुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को वो जगा बतला दी के हमें जगा जा कर तौबा वा इस्तिगफार में और दुआ और नमाज़ में मशगूल हो

जाये। इस्लीये हमें सूटून ए आयशा रज़ियल्लाहु ताला अन्हा कहा जाता है।

सफा चबूतरा

साफा सैबान और सयादार जगह को कहा जाता है और उस से मुराद मस्जिद ए नबवी शरीफ में वक़्े वो सईदार जगह है, जहां फुकरा मुहाजिरीन कियाम फरमाया करता है जिसका कोई ठिकाना नहीं था। मस्जिद के शुमाल मग़रिब में ये छपेरा बना हुआ था। वह कयाम करने वालों को "आशाब ए पर्याप्त" का लाख मिला। इस वक्त वो

चबूतरे की शकल है, जो जमीन से निस्फ मीटर बुलंद, 12 मीटर लंबी हवा 8 मीटर चौड़ा है, उसके चारो तरफ जाली डार घेरा बना हूं। असहाब ए सुफ़ा की तआदद में कामी ज़्यादती होती रहती थी, मुख्तलिफ़ रिवायत के पेश ए नज़र अगर एक वक़्त में उनकी तादाद सत्तार थी तो किसी वक़्त चार तक की अज़ीम जमात पर मुश्तमिल होते थे, उस मक़ाम पर बैठने और सआदत हासिल करने के लिए लोगो की बड़ा तदाद रहती थी, यहां पर भी बैठने की कोशिश

करनी चाहिए, क्यों के ये वो जगह है जहां बैठ कर सहाबा किराम रजियल्लाहु ताला अनहम ने नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से तलीम हासिल की। अगर बाब ए जिब्राइल से दाखिल होंगे तो दायी जानिब साफ चबूतरा होगा।

जन्नत उल बाकी

जन्नत उल बाकी मदीना मुनव्वर का मुकद्दस कब्रस्तान है। जिस में दास हजार से जायद सहाबा किरम रजियल्लाहु अन्हुम, जिस में 9/ अजवाज ए मुताहरात (पाकीजा

बिवियां) चार बनात ए तैय्यबात (साहब जादियां) और साहबजादा ए रसूल हजरत इब्राहिम रजियल्लाहु ताला अन्हु, नवासा ए रसूल हजरत हसन रजियल्लाहु तआला अन्हु, दामाद ई रसूल व खलीफा ए सालिस सैय्यदुना हजरत उस्मान ए गनी रजियल्लाहु ताला अन्हु उनके अलावा अलग तबाइन व बुज़ुर्गन ए दिन मदफून है। मस्जिद ए नबवी के मशरिकी जानिब बैरूनी सेन जहां खतम होता है वहीं से जन्नत उल बाकी शुरू होता है। उमुमन इसराक के वक्त और बाद की

नमाज ए असर उसका दरवाजा खुलता है और जियारत व इसाल ए सवाब के लिए हाजरी का मौका मिलता है।

अहल ए बाकी पर सलाम

जब जन्नत उल बाकी क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो तो ये दुआ पढ़ें:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ فَإِنَّا إِنْ
شَاءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ۔ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ
لِأَهْلِ الْبَقِيْعِ الْغَرْقَدِ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلَنَا وَلَهُمْ

तर्जमा: ऐ ईमान वली कौम तुम पर सलाम हो, बेशक हम इंशा अल्लाह तुम से मिलने

वाले हैं। ऐ अल्लाह अहल ए बाकी की मगफिरत फरमा। ऐ अल्लाह हमारी और उनकी मगफिरत फरमा।

हजरत उस्मान ए गनी रजी अल्लाहु अन्हु की खिदमत माई सलाम

खलीफ़ा ए सालिस, दामाद ए रसूल सैय्यदुना हज़रत उस्मान ए गनी रज़ियल्लाहु ताला अन्हु भी बाकी में आराम फरमा है। इसलिए उमूमी दुआ व इसाल ए सवाब के साथ खास उनकी खिदमत में भी सलाम पेश करें:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا ثَالِثَ الْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِيْنَ
اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَاذِى النُّوْرَيْنِ
اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَاعُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ
اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ

तर्जमाः ऐ खुलफा ए राशिदीन में से तीसरे नंबर के खलीफा आप पर सलाम हो, ऐ दो नूर वाले आप पर सलाम हो, ऐ उस्मान इब्न ए अफ्फान रजियल्लाहु ताला अन्हु आप पर सलाम हो, आप पर सलाम हो और अल्लाह की रहमत व बरकात हो।

मदीना मुनव्वराह के मक़ामत ए मुक़द्दस की ज़ियार

तजिस तरह मक्का मुकर्रम में तारीख मकामत की जियारत उमर ग्रुप वाले कराटे है, इसी तरह मदीना मुनव्वर के तारीख मकामत पर भी उन्हीं की जानिब से ले जाने का एहतिमाम होता है, और चंद घंटों में वो अहम तारेन मकामत की जियारत करवटे है। उमूमन सुबह नाश्ते के बाद इन मकामात की जियारत के लिए ले जाते हैं, उन मकामात का मुख्तसर तरफ पेश किया

जा रहा है।

मस्जिद ए गमामा

मस्जिद ए नबवी के जुनूब ए मगरिब में ३०५ मीटर के फासले वाला है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आखिरी सालो मैं यह ईद की नमाज अदा फरमाते थे, इस लिए तारीख किताबो माई इस का नाम मस्जिद ए मुसल्लाह (ईद गाह वाली मस्जिद) है। आज कल ये मस्जिद ए गामा के नाम से मारूफ है, ये मस्जिद बंद रहती है, बस बाहर ही से जियारत की जा सकती

है। इस को मस्जिद ए गामा कहने की एक वजह ये भी लिखी है कि नमाज ए इस्तिस्का की अदायगी के दोरां एक बादल ने आपको धूप से साया कि रखा था।

मस्जिद ए अबू बक्र

मस्जिद ए गामा से ४० मीटर के फासले पर ये मस्जिद वाक़े है। मस्जिद ए गामा और मस्जिद ए अबू बकर के दरमियान से रास्ता मस्जिद ए नबवी के तरफ जाता है। यह पर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बाज औकात ईद की नमाज अदा फरमाई है,

फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद खलीफा ए अव्वल हजरत अबू बकर रजी अल्लाहु अन्हु ने यह ईद की नमाज पढाई। इसी वजह से उन की तरफ मनसूब कर के इस का नाम रखा गया है। ये एक गुंबद वाली मस्जिद है, जो दिनो बंद रहती है।

मस्जिद ए अली

मस्जिद ए नबवी से २९० मीटर और मस्जिद ए गामा से १२२ मीटर के फासले अप्रैल वक्त है। ये भी उन मकामत माई से है जहां

रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज ए ईद अदा फरमाई है और ईदगाह के तीन मस्जिद में से तीसरी है। इसे मस्जिद ए अली इस लिए कहा जाता है के हजरत अली रजी अल्लाहु अन्हु ने जहां ईद की नमाज पढाई थी।

मस्जिद ए उमर इब्न खत्ताब

मस्जिद ए नबवी से ४५५ मीटर और मस्जिद ए गामा से १३३ मीटर के फसल पर काम है। बाज मुता अखिरीन के राय ये है के यहां भी रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने नमाज ए ईद अदा फरमाई है। और अपने डोर ए खिलाफत मैं हजरत उमर रजी अल्लाहु अन्हु ने भी यहां ईद की नमाज पढ़ी होगी, इस लिए आप की तरफ इसे मनसूब कर दिया गया।

मस्जिद ए इजाबा

ये वो मस्जिद है जहां नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बोहत लंबी नमाज पढ़ कर तीन दुआएं की थी। एक दुआ ये थी के आए अल्लाह मेरी उम्मत को आम कहत साली से हलक न फरमा, दूसरी

दुआ ये फरमाई थी के ऐ अल्लाह मेरी उम्मत को अग्यार के तसल्लुत से ना काम ओ हलक न फरमा, ये दोनो दुआएं क़बूल हो गई, तीसरी दुआ ये फरमाई थी के ऐ अल्लाह मेरी उम्मत को आपस की खाना जंगी से महफूज फरमा, ये दुआ कबूल नहीं हुई। (मुस्लिम शरीफ)

ईस मक़ाम पर आज मस्जिद बनाई गई है। उसको मस्जिदुल इजाबाह कहते हैं। ये मस्जिद जन्नत उल बाकी से जानीब ए शुमाल मैं वाक़े है। हमें मैं जा कर दो रकात

नमाज पढ़ कर दुआ करना मुस्तहब है।

मस्जिद ए जुमाह

हज़रत मुसब बिन उमैर रज़ी अल्लाहु अन्हु और हज़रत असद बिन ज़ुरारा रज़ी अल्लाहु अन्हु मदीना मुनव्वराह मैं नमाज़ ए जुमा पढते थे, जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हिजरत कर के आए तो क़ुबा माई क़याम फरमाया, जुमा के दिन वहा से मदीना मुनव्वराह के लिए रवांगी हुई मस्जिद ए कुबा से तकरीबान एक किलोमीटर के फासले पर बनू सालिम की

बस्ती में नमाज ए जुमा अदा फरमाई। बनु सालिम ने उस जगह मस्जिद बना ली। जो मस्जिद जुमा और मस्जिद ए बनी सालिम कहलाती है। क्या मैं ६५० नमाज़ियों की गुणहाश है।

मस्जिद ई कुबा

मस्जिद ए क़ुबा वो मस्जिद है जिस की तामीर में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने दस्त ए मुबारक से पत्थर रखा था। और हिजरत के बाद सब से पहले इस मस्जिद की तामीर हुई है। और यही वो

मस्जिद है जिसके बारे में कुरआन ए करीम में फरमाया है। (अल तौबाह १०८)

لَّمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى ٱلتَّقْوَىٰ

तर्जमा: वो मस्जिद जो तक्वे की बुनियाद पर तामीर की गई। अब तह मस्जिद बोहट बड़ी बन गई है। सड़क से मुत्तसिल खुले मैदान में है। और ये मस्जिद मस्जिद ए नबवी से तकरीबन ३/४ किलोमीटर के फासले पर है। मस्जिद ए क़ुबा की हाज़री मुस्तहब है, और बेहतर ये है के सन्निचार के दिन जाए इस के लिए हज़रत इब्न ए उमर रज़ी

अल्लाहु अन्हु फरमाते है के आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर शनिचर के दिन मस्जिद ए क़ुबा तशरीफ़ ले जाया करते थे। मस्जिद मैं हाजिर हो कर नफल नमाज पढ़े, एक हदीस मैं है के आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मस्जिद ए कुबा मैं नमाज पढ़ना सवाब के एतेबार से एक उम्र के मानिंद है। (तिर्मिज़ी)

एक दूसरी हदीस मैं है के जो शेख अपने घर में वुज़ू कर के मस्जिद ए क़ुबा आता है फिर उस में नमाज़ पढ़ता है, तो उसके लिए

एक उम्र के बराबर सवाब है। (इब्न ए माजा)

मस्जिद ए क़िबलातैन

मस्जिद में दो मेहराव है, एक बैत उल मकदिस की तरफ और एक बैत उल अल्लाह की तरफ, नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मदीना मुनव्वारा हिजरत के बाद सत्र मा हिनो तक बैत उल मकदिस को किबला बना कर नमाज अदा की गई, एक दिन इस्मी मस्जिद ए किबलातें में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम नमाज पढ़ा रहे दरबार ए इलाही से दोरान ए नमाज बैत उल लल्लाह की तरफ रुख करने का हुक्म हुआ, इसको मस्जिद ए किबलातैन कहा जाता है।

जबल ए उहुद

जबल ए उहुद के बारे में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया:

اُحُدٌّجَبَلٌ یُحِبُّنَا وَ یُحِبُّہٗ

तर्जमा: उहुद ऐसा पहाड़ है जो हम से मोहब्बत करता है या हम उससे मोहब्बत करते हैं। (बुख़ारी) उहुद पहाड़ के दमन में

मशहोर गज़वा गज़वा ए उहुद हुआ, जिन में सत्तार सहाबा रज़ियल्लाहु ताला अन्हुम शहीद हुए, उनमे आप के अम्म ए मुहतरम सैय्यद उस शुहादा, हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु ताला अन्हु भी है। मुस्तहब ये है कि शुहादा ए उहुद की जियारत हर जुमेरात को की जाए, मुल्ला अली कारी रहमतुल्लाहि अलैहि ने लिखा है के जबल ए उहुद और शुहादा ए उहुद दोनो की जियारत की मुस्तकिल नियत करे, और शुहादा ए उहुद पर सलाम पेश करें और इसाल ए

सवाब का एहतिमाम करे।

मासाजिद ए सित्ता

मस्जिद उल फतह, मस्जिद ए सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु ताला अन्हु, मस्जिद ए अली रज़ियल्लाहु ताला अन्हु, मस्जिद ए उमर रज़ियल्लाहु ताला अन्हु, मस्जिद ए साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु ताला अन्हु, मस्जिद ए अबू बक्र रज़ियल्लाहु ताला अन्हु ये चे मस्जिद उसी जगह पर बनी हुई है जहां गजवा ए खंडक का वकिया पेश आया था। मदीना मुनव्वारा के मशहूर पहाड़

जबल ए सिला के दमन में ये मस्जिद है। जहां जिस सहबी को नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुतय्यन फरमाया था उसी मक़ाम पर उनके नाम से मस्जिद बना दी गई थी। पहाड़ के दमन में एक ऊंचा टीला है उसपर नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गजवा ए खंडक के अवसर पर तशरीफ फरमा द, वह पर एक मस्जिद अल्फात के नाम से बनाई गई। 1424 हिजरी में जबल ए सिला के दमन में मस्जिद ए खंडक के नाम से एक

बड़ी मस्जिद बना दी गई है और मस्जिद ए सिट्टा में से बाज मस्जिद उन में शामिल हो गई है।

नोट: बाकी और भी मकामत ए मुकद्दसा है जिन्की तदाद तीस तक गिन्वाई जा ति है, अगर हो सके तो उनकी भी जियारत करें।

चालीस नमाज

मर्द हज़रत मस्जिद ए नबवी में चालीस नमाज़ बजामत अदा करें। चालीस नमाज़ की पाबन्दी से अज़ाब ए क़ब्र और निफ़ाक से बारात और जहन्नम से खलासी नसीब होती है।

मदीना से वापसी

जब मदीना मुनव्वर से वापस हो तो तारीख ए बाला के मुताबिक रोजा ए अकादस पर हाजिर हो कर सलाम करें, इस जुदाई ओर आंसू बहाएं और दुआ करें और दोबारा हाजरी मील हसरत के साथ वापस हो।

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

तवाफ की दुआएं

पहले चक्कर की दुआ

سُبْحَانَ اللّٰهِ ،وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ،وَلَا اِلٰهَ اِلَّا
اللّٰهُ، وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا
بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ، وَالصَّلٰوةُ
وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ، اَللّٰهُمَّ
اِيْمَانًا بِكَ، وَتَصْدِيْقًا بِكِتَابِكَ، وَوَفَاءً
بِعَهْدِكَ، وَاتِّبَاعًا لِّسُنَّةِ نَبِيِّكَ وَحَبِيْبِكَ
مُحَمَّدٍ ﷺ، اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ
وَالْعَافِيَةَ وَ الْمُعَافَاةَ الدَّائِمَةَ فِى الدِّيْنِ
وَالدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ، وَ الْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ

وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ

तर्जमा: अल्लाह ताला पाक है, और सब तारीफे अल्लाह ताला ही के लिए हैं, और अल्लाह ताला के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं, और अल्लाह ताला सबसे बड़ा है, और (गुनाहों से फिरने की) ताकत और (इबादत की तरफ रागिब होने की) कुव्वत अल्लाह ताला ही की तरफ से है, जो बुजुर्गी और अजमत वाला है, और अल्लाह ताला के रसूल सल्लल्लाहु अलेही वसल्लम पर अल्लाह ताला की रहमत और सलाम

नाजिल हो। ऐ अल्लाह तुझ पर ईमान लाते हुए और तेरी किताब की तस्दीक करते हुए और तुझसे किए हुए अहद को पूरा करते हुए और तेरे नबी सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम और तेरे हबीब सल्लल्लाहो अलेही वसल्लम की सुन्नत की पैरवी करते हुए (मैं तवाफ शुरू करता हूं)। मैं तुझसे (गुनाहों से) माफी का, (हर बला से) सलामती का, दीन व दुनिया और आखिरत में (हर तकलीफ से) दाईमी हिफाजत, जन्नत से मुतमत्ते होने और दोजख से निजात पाने का सवाल करता हूं।

दूसरे चक्कर की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذَا الْبَيْتَ بَيْتُكَ وَ الْحَرَمَ
حَرَمُكَ وَ الْاَمْنَ اَمْنُكَ وَ الْعَبْدَ عَبْدُكَ
وَاَنَا عَبْدُكَ وَابْنُ عَبْدِكَ وَهٰذَا مَقَامُ
الْعَآئِذِبِكَ مِنَ النَّارِ، فَحَـرِّمْ لُحُوْمَنَا وَ
بَشَرَتَنَا عَلَى النَّارِ، اَللّٰهُمَّ حَبِّبْ اِلَيْنَا
الْاِيْمَانَ وَ زَيِّنْهُ فِيْ قُلُوْبِنَا وَ كَرِّهْ اِلَيْنَا
الْكُفْرَ وَ الْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ وَ اجْعَلْنَا
مِنَ الرَّاشِدِيْنَ، اَللّٰهُمَّ قِنِيْ عَذَابَكَ يَوْمَ
تَبْعَثُ عِبَادَكَ ، اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِيْ الْجَنَّةَ
بِغَيْرِ حِسَابٍ

तर्जमा: ऐ अल्लाह! बेशक ये घर तेरा घर है, और ये हरम तेरा हरम है, और (यहां का) अमन तेरा ही दिया हुआ अमन है, और हर बंदा तेरा ही बंदा है और मैं भी तेरा ही बंदा हूं, और तेरे ही बंदे का बेटा हूं, और यह दोजक की आग से तेरी पनाह पकड़ने वालों की जगह है, पस तू हमारे गोश्त और पोस्त को दोजख पर हराम कर दे। ए अल्लाह! हमारे लिए ईमान को महबूब बना दे, और हमारे दिलों में उसको जीनत बख्श दे, और कुफ्र व बदकारी व नाफरमानी से

हमारे लिए नफरत पैदा कर दे, और हमें हिदायत पाने वालों में शामिल फरमा। ऐ अल्लाह! जिस दिन तू अपने बंदो को दोबारा जिंदा करके उठाएगा, मुझे अपने हिसाब से बचा लेना। ए अल्लाह! मुझे बगैर हिसाब के जन्नत अता फरमा।

तीसरे चक्कर की दुआ

اَللّٰھُمَّ اِ نِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الشَّكِّ وَالشِّرْكِ وَالنِّفَاقِ وَالشِّقَاقِ وَسُوْءِالْاَخْلَاقِ وَ سُوْءِ الْمَنْظَرِ وَ الْمُنْقَلَبِ فِی الْمَالِ وَالْاَھْلِ وَ الْوَلَدِ ، اَللّٰھُمَّ اِ نِّیْ اَسْئَلُكَ رِضَاكَ وَالْجَنَّةَ

وَ اَعُوْذُبِكَ مِنْ سَخَطِكَ وَ النَّارِ، اَللّٰهُمَّ
اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْقَبْرِ وَ اَعُوْذُبِكَ
مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَ الْمَمَاتِ

तर्जमा: ऐ अल्लाह! बेशक मैं (तेरे अहकाम में) शक से, और तेरी (जातो सिफात) में शिर्क से, और इख्तिलाफ व निफाक से, और बुरे अखलाक से, और माल व अहलो इयाल में बुरे हाल और बुरे अंजाम से तेरी पाना चाहता हूं। ए अल्लाह! बेशक मैं तुझसे तेरी रजामंदी और जन्नत का सवाल करता हूं और तेरे गजब और दोजख की

आग से तेरी पनाह चाहता हूं। ए अल्लाह! में कब्र की अजमाइश से तेरी पनाह चाहता हूं, और जिंदगी और मौत की हर अजमाइश व मुसिबत से तेरी पनाह मांगता हूं।

चौथे चक्कर की दुआ

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْهُ حَجًّا مَّبْرُوْرًا وَّ سَعْيًا مَّشْكُوْرًا وَّ ذَنْـبًا مَّغْفُوْرًا وَّعَمَلًا صَالِحًا مَّقْبُوْلًا وَّ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ يَا عَالِمَ مَا فِى الصُّدُوْرِ اَخْرِجْنِىْ يَا اَللّٰهُ! مِنَ الظُّلُمَاتِ اِلَى النُّوْرِاَللّٰهُمَّ اِ نِّىْ اَسْئَلُكَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَ عَزَآئِمَ مَغْفِرَتِكَ وَ السَّلَامَةَ

مِنْ كُلِّ اِثْمٍ وَّالْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَّالْفَوْزَ
بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ،اَللّٰهُمَّ قَنِّعْنِىْ
بِمَا رَزَقْتَنِىْ وَبَارِكْ لِىْ فِيْمَا اَعْطَيْتَنِىْ وَ
اخْلُفْ عَلٰى كُلِّ غَآئِبَةٍ لِّىْ مِنْكَ بِخَيْرٍ

तर्जमा: ऐ अल्लाह! मेरे इस (हज) को हज्जे मकबूल और कामयाब कोशिश या गुनाहों की मगफिरत का जरिया और मकबूल नेक अमल और बेनुक्सान तिजारत बना दे। ऐ दिलों के हाल को जाने वाले! ऐ अल्लाह! मुझे गुनाहो के अंधेरो से ईमान व अमले सालेह की रोशनी की तरफ निकल। ऐ अल्लाह! मैं

तुझ से तेरी रहमत के हुसूल के लाजमी जरीयो का और अस्बाब का जो तेरी मगफिरत को मेरे लिए लाजमी बना दे, और हर गुनाह से बचे रहने का और हर नेकी से फायदा उठाने का और जन्नत से बहरावर होने का और दोजख से नजात पाने का सवाल करता हूँ। और ऐ मेरे परवर्दीगार! तूने मुझे जो कुछ रिज्क दिया है उस पर कनाअत भी अता कर, और जो नेमते मुझे अता फरमाई है उन में बरकत भी दे, और मुझे अपने करम से हर नुक्सान का नेमुल बदल अता कर।

पाँचवे चक्कर की दुआ

اَللّٰهُمَّ اَظِلَّنِىْ تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِكَ يَوْمَ لَا
ظِلَّ اِلَّا ظِلُّ عَرْشِكَ وَلَا بَاقِىَ اِلَّا وَجْهُكَ
وَاسْقِنِىْ مِنْ حَوْضِ نَبِيِّكَ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ ﷺ شَرْبَةً هَنِيْٓئَةً مَّرِيْٓئَةً لَّا نَظْمَأُ
بَعْدَهَا اَبَدًا.اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا
سَئَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ سَيِّدُنَا مُحَمَّدٌ ﷺ
وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّمَا اسْتَعَاذَكَ مِنْهُ
نَبِيُّكَ سَيِّدُنَا مُحَمَّدٌ ﷺ، اَللّٰهُمَّ اِ نِّىْ
اَسْئَلُكَ الْجَنَّةَ وَ نَعِيْمَهَا وَمَا يُقَرِّبُنِىْ اِلَيْهَا
مِنْ قَوْلٍ اَوْ فِعْلٍ اَوْ عَمَلٍ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ

النَّارِ وَ مَا يُقَرِّبُنِىْ اِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ اَوْ فِعْلٍ اَوْ عَمَلٍ

तर्जमा: ऐ अल्लाह! जिस रोज तेरे अर्श के साए के सिवा कही साया ना होगा और तेरी जात के सिवा कोई बाकी ना रहेगा, मुझे अपने अर्श के साए में जगा देना, और अपने नबी सैय्यदीना मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हौज (कौसर) से मुझे ऐसा खुशगवार और खुशजाइका शरबत पिलाइये के उसके बाद हमें प्यास न लगे। ऐ अल्लाह में तुझ से उन चीजों की भलाई मांगता हूं जिन को तेरे नबी

सय्यिदिना मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तुझ से तलब किया, और उन चीजो की बुराइयों से तेरी पनाह चाहता हूं जिनसे तेरे नबी सय्यिदिना मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पनाह मांगी। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से जन्नत और उसकी नेमतो का और हर उस कौल या फेल या अमल की तौफीक का जो मुझे जन्नत से करीब कर दे सवाल करता हूं, और मैं दोजख से और हर उस कौल या फेल या अमल से जो मुझे दोजख से करीब कर दे तेरी पनाह चाहता हूं।

चट्टे चक्कर की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنَّ لَكَ عَلَىَّ حُقُوْقًا كَثِيْرَةً فِيْمَا
بَيْنِىْ وَ بَيْنَكَ، وَ حُقُوْقًا كَثِيْرَةً فِيْمَا بَيْنِىْ
وَبَيْنَ خَلْقِكَ، اَللّٰهُمَّ مَا كَانَ لَكَ مِنْهَا
فَاغْفِرْهُ لِىْ، وَ مَا كَانَ لِخَلْقِكَ فَتَحَمَّلْهُ
عَنِّىْ، وَ اَغْنِنِىْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ،وَ
بِطَاعَتِكَ عَنْ مَّعْصِيَتِكَ ،وَ بِفَضْلِكَ
عَمَّنْ سِوَاكَ، يَا وَاسِعَ الْمَغْفِرَةِ،اَللّٰهُمَّ
اِنَّ بَيْتَكَ عَظِيْمٌ ،وَ وَجْهَكَ كَرِيْمٌ ،وَّاَنْتَ
يَا اَللّٰهُ حَلِيْمٌ ،كَرِيْمٌ، عَظِيْمٌ ،تُحِبُّ
الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّىْ

तर्जमा: ऐ अल्लाह! मुझ पर तेरे बहुत से हुकूक उन मामलात में है जो मेरे और तेरे दरमियान है, और बहुत से हुकूक उन मामलात में है जो मेरे और तेरी मखलूक के दरमियान है, ऐ अल्लाह! उन में से जिनका ताल्लुक़ सिर्फ ते री ज़ात से हो उन (की कोताही) की मुझे माफ़ी दे, और जिनका तल्लुक़ तेरी मख़्लूक से भी हो उनकी फिरोगुज़ाश्त की माफ़ी का तू ज़िम्मेदार बन जा। और ऐ वसी मगफिरत वाले! मुझे रिज़्के हलाल अता फरमा कर हराम से, और

फरमाबरदारी की तौफीक अता फरमा कर नफरमानी से, और अपने फजल से बहरा मंद फरमा कर अपने सिवा दूसरों से मुस्तगनी कर दे। ऐ अल्लाह! बेशक तेरा घर बड़ी अजमत वाला है, और तेरी जात बड़ी अजमत वाली है, और तू ए अल्लाह! बड़ा बावकार है, बड़ा करम वाला है, और बड़ी अज़मत वाला है, तू माफ़ी को पसंद करता है, पस मेरी ख़ताओ को माफ़ फरमा दे।

सातवें चक्कर की दुआ

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ اِیْمَانًا كَامِلًا وَّ یَقِیْنًا

صَادِقًا وَّ رِزْقًا وَّاسِعًا وَّقَلْبًا خَاشِعًا وَّ لِسَانًا
ذَاكِرًا وَّ رِزْقًا حَلَالًا طَيِّبًا وَّ تَوْبَةً نَّصُوْحًا
وَّتَوْبَةً قَبْلَ الْمَوْتِ وَرَاحَةً عِنْدَ الْمَوْتِ وَ
مَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً بَعْدَ الْمَوْتِ وَالْعَفْوَ عِنْدَ
الْحِسَابِ وَالْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ
بِرَحْمَتِكَ يَا عَزِيْزُ يَا غَفَّارُ، رَبِّ زِدْنِىْ عِلْمًا
وَّ اَلْحِقْنِىْ بِالصّٰلِحِيْنَ

तर्जमा: ऐ अल्लाह! ऐ बड़ी इज्जत और बड़ी मगफिरत वाले! मैं तुझ से तेरी रहमत के वसीले से कामिल ईमान, और सच्चा यकीन, और कुशादा रिज्क, और आजीज़ी करने

वाला दिल, और तेरा जिक्र करने वाली जुबान, और हलाल व पाक रोजी, और सच्चे दिल की तौबा, और मौत से पहले की तौबा , और मौत के वक़्त का आराम, और मरने के बाद मगफिरत, और रहमत और हिसाब के वक़्त माफ़ी, और जन्नत का हुसूल और दोज़ख से नजात माँगता हूँ। ए परवरदिगार मेरे इल्म में इजाफा कर और मुझे नेक लोगों में शामिल फरमा दे।

नमाज़े जनाज़ा

(१) पहली तकबीर के बाद सना पढ़े।

سُبْحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ وَتَبَارَکَ اسْمُکَ وَتَعَالٰی جَدُّکَ وَجَلَّ ثَنَاءُكَ وَلَا اِلٰهَ غَیْرُکَ

(२) दुसरी तकबीर के बाद दुरूद शरीफ पढ़े।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا صَلَّیْتَ عَلٰٓی اِبْرَاهِیْمَ وَعَلٰٓی اٰلِ اِبْرَاهِیْمَ اِنَّكَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ

اَللّٰھُمَّ بَارِكْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓی اٰلِ اِبْرَاهِیْمَ وَعَلٰٓی اٰلِ اِبْرَاهِیْمَ اِنَّكَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ

(३) तीसरी तकबीर के बाद दुआ पढ़े।

मय्यित बालिग़ हो तो ये पढ़े

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهُ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهُ مِنَّا فَتَوَفَّهُ عَلَى الْاِيْمَانِ

मय्यित ना बालिग़ बच्चा हो तो ये दुआ पढ़े

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا

मय्यित ना बालिग़ बच्ची हो तो ये दुआ पढ़े

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا اَجْرًا
وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً

(४) चौथी तक्बीर के बाद सलाम फेरना।

हमारी अहम किताबें

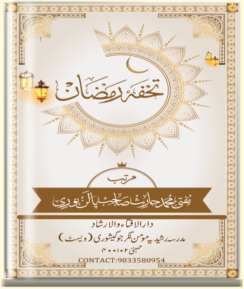

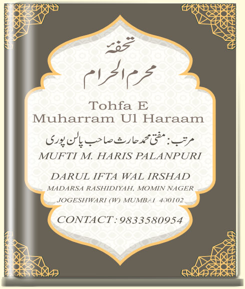

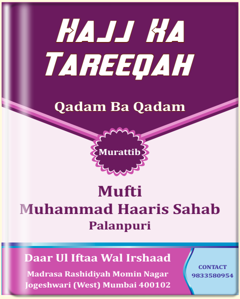

DARUL IFTA WAL IRSHAD

MADARSA RASHIDIYA, MOMIN NAGAR

JOGESHWARI (W) MUMBAI 400102

CONTACT:9833580954